वर्ष 8, अंक 08 मई 2009

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

विश्वस्नेहसमाज

(एक क्रांति)

कीमत 5 रुपये

दोहरे मापदण्ड

पर्यावरण संरक्षण: समस्या एवं समाधान

देश पर गहराते संकट के कारण एवं बचने के उपाय

रचनाएं आमंत्रित है

निबंध संग्रह/कहॉनी संग्रह/व्यंग्य संग्रह हेतु

इसमें आरक्षण/भ्रष्ट्राचार/दहेज/जातिवाद/नारी शोषण/ राजनीति से संबंधित आलेख/व्यंग्य रचनाएं/संस्मरण आमंत्रित है. इस बात विशेष ध्यान रक्खें कि रचनाएं १५०० शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा २५०/-रुपये अथवा दो रचनाएं ५००/- रुपये सहयोग राशि के साथ

अंतिम तिथि : १५ दिसम्बर २००९

आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. 538702010009259 में सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है.

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें:

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

पत्रिका के आगामी विशेषांक

अगला विशेषांक : पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक (जून २००९)

- विन्ध्य विशेषांक(नवं०९)
- बाल्य कवि विशेषांक(अक्टूबर०९)
- महिला रचनाकार विशेषांक
- अहिन्दी भाषी रचनाकार विशेषांक(अक्टू१०)
- युवा रचनाकार विशेषांक (जनवरी१०)
- अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सेवक विशेषांक (मई १०)

अपनी प्रतियां अभी बुक करवा लेवें। उपरोक्त सभी विशेषांको हेतु संबंधित आलेख/कहॉनियॉ/कविताएं/शुभकामना संदेश/विज्ञापन आमंत्रित है. विज्ञापन दर निम्नवत है:

पृष्ठ	दर प्रति सेमी. (स्वेत/श्याम)	दर प्रति सेमी. (रंगीन)
अंतिम आवरण पृष्ठ	७०००.००	१००००.००
द्वितीय आवरण	५०००.००	७०००.००
तृतीय आवरण	४०००.००	६०००.००
सामान्य पृष्ठ	३०००.००	४५००.००
शुभकामना संदेश	२५०.००	४००.००
सचित्र जीवन परिचय	५००.००	१०००.००

आप अपनी सहयोग राशि विजया बैंक की किसी शाखा में खाता सं०:सीए 538702010009259 में संपादक, विश्व स्नेह समाज के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सपादक, विश्व स्नेह समाज, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान एवं विश्व स्नेह समाज के सदस्यों को २५प्रतिशत छूट अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए जबाबी लिफाफे के साथ लिखें या ईमेल करें: vsnehsamaj@rediffmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्षः८ अंकः८ मई ०९, इलाहाबाद

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रतिः रु०५/–
वार्षिकः रु० ६०/–
विशिष्ट सदस्य:रु० १००/–
द्विवार्षिकसदस्य:रु०११०/–
पाच वर्ष–रु०२७०/–
आजीवन सदस्यः रु०११००/–
संरक्षक सदस्य :रु० २५००/–

अंदर के पन्नों में:

दोहरे मापदण्ड ०६

देश पर गहरे संकट के कारण एवं बचने के उपाय ०९

पर्यावरण संरक्षणः समस्या एवं समाधान १३

स्थायी स्तंभ

अपनी बात	०४
प्रेरक प्रसंग –	०५
कैरियरः सकरात्मक सपने देखिए	०८
कहानीःउखड़ी सिलाई	१५
अध्यात्मः बुद्धावतार	१६
कहॉनीः काश वह मुझे बरी कर देता	१७
व्यंग्यः चॉद पर साहित्यकार सम्मेलन	१८
व्यक्तित्व –	२२
स्नेहबाल मंच–	२३
कहॉनीः छिद्र से झांकती रोशनी	२५
खेल की दुनियाः कबड्डी का निर्धारित सूचांक	२६
ग़ज़ल	१८,१५
कविताएं–	१२, १७, १६, २४, ३०
साहित्य समाचार–	२७
स्वास्थ्य–	२८
चिट्ठी आई है–	३१
लघु कथाएं–	३२
पुस्तक समीक्षा–	३३

अपनी बात

क्या लोकतंत्र की लुटिया अब डूब गयी?

चुनावी महापर्व २००६ में नेताओं के क्रियाकलाप को देखकर तो ऐसा लगता है जैसे अपने देश में लोकतंत्र की लुटिया डूब गयी है. अभी तक सम्पन्न तीन चरणों मतदान का प्रतिशत देखिए तो आपको इस बात का अंदाजा लग सकता है कि हमारे देश की जनता इन नेताओं के क्रिया कलाप से कितनी सहमत है. बाकी जगह की तो बात ही छोड़िए देश के सक्रिय युवा नेता, गांधी परिवार के भावी प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार राहुल गांधी के संसदीय क्षेत्र अमेठी में भी कुल ४०प्रतिशत मत पड़े. अगर देश की ४०-४५ प्रतिशत जनता देश का भविष्य तय करेगी तो इस लोकतंत्र का क्या होगा? ४० प्रतिशत कुल मत उसमें २० से २५ उम्मीदवार. अपने क्षेत्र का १० से १५ प्रतिशत मत पाकर हमारे जननेता अपने आपको क्षेत्र का प्रतिनिधि कहने में फुले नहीं समाते. अलग-अलग क्षेत्रों के मतदाताओं से वार्ता करने पर यह बात भी खुलकर सामने आयी है कि चुनाव लड़ रहे सभी प्रत्याशियों में से किसी के पक्ष में भी मतदाता नही है. मत प्रतिशत गिरने का यह भी एक कारण है. दूसरी बात यह है कि आज सभी पार्टिया केवल तू तू मैं मैं में लगी रहती है, उन्हें जनता के मुद्दे, देश का मुद्दा गौड़ नजर आता है और आपसी छीटाकंशी ज्यादे फायदे मंद नजर आती है

कई क्षेत्रों के उम्मीदवारों से मतदाता किसी भीक्या यह वाकई लोकतंत्र के लक्षण दिखते हैं. ऐसे में तो यह जरुरी हो जाता है कि संविधान का संशोधन कर विजयी प्रतिभागी को प्राप्त मतों में से कम से कम ६० प्रतिशत मत पाने वाले उम्मीदवार को ही विजयी घोषित किया जाए. दूसरा मतदान को अनिवार्य घोषित किया जाना चाहिए. संसदीय क्षेत्र में खड़े उम्मीदवार में से किसी भी उम्मीदवार को पंसद नहीं आने पर एक अलग से बटन देनी चाहिए ताकि मतदाता उसका प्रयोग कर अपनी सहमति/असहमति जाहिर कर सकें. अगर कुल पड़े मतों का २५ प्रतिशत मत किसी भी उम्मीदवार के पक्ष में नहीं पडता है तो सभी वर्तमान उम्मीदवारों की उम्मीदवारी निरस्त कर नये उम्मीदवारों को उस क्षेत्र से खड़ा होने का मौका दिया जाना चाहिए. ताकि मतदाता अपने इच्छानुसार मताधिकार का सही प्रयोग कर सकें.
अभी सम्पन्न हुए लोकसभा चुनाव में

ऐसे में तो सही यह होता कि कसी को छेड़ना हमने विरासत में पाया है. द्वापर कृष्ण भगवान ने गोपियों को छेड़ा, उनकी मटकी फोड़ी, नदियों में नहाते समय कपड़े गायब किए. तुलसीदास ने छत से कुदकर रत्ना को छेड़ा. भाई अपनी बहनो को, बहने अपनी छोटी बहनो-भाइयों को, देवर भाभियों को, जीजा अपने साले-सालियों और सरहजों का, भाभियां देवरों को छेड़ती है. इनके छेड़ने के भी अपने ही मजे है. होली में तो छेड़ने के दायरे बहुत लम्बे हो जाते है. ए सब छेड़छाड़ सामाजिक दायरे में माने जाते है. शोधोपरान्त इसका भी दायरा बढ गया है. जैसे सड़क पर पागलों को, गांवो में कम बुद्धि वालों को, सड़क पर जानवरों का. धीरे धीरे यह दायरा सड़क चलते लड़कियों को छेड़ने पर आ गया. पहले गली से, पड़ोसी से शुरु हुआ ये सफर चौराहों, स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों तक आ गया. हद तो तब हो गई जब २१वीं सदी के लड़के अपनी उम्र के दो गुने, तीन गुने महिलाओं यहॉ तक कि दादियों की उम्र की महिलाओं को छेड़ने से बाज नहीं आते. छेड़छाड़ कई तरह की होती है. सीटी बजाकर, कमेंट कसकर, लड़कियों का पीछा कर, बस में बहाने से हाथ छूकर, मेले में, भीड़ में धक्के देना, कभी साड़ी का पल्लू खींचकर, कभी दुपट्टों को खींचकर, जलती हुई सिगरेट फेंककर, टमाटर फेंककर इत्यादि. ऐसा नहीं है कि छेड़छाड़ में केवल नवयुवक ही आगे है, प्रौढ़ और वयोवृद्ध भी इसमें अपनी सहभागिता निभाने लगे है.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रेरक प्रसंग

ब्रम्हाजी को भी भ्रम

एक बार ब्रम्हा जी को भ्रम हो गया कि भगवान श्री कृष्ण वास्तव में पूर्ण अवतार है या वे केवल चमत्कारी लीलायें कर रहे हैं. उनसे मिलने की जिज्ञासा हुई और वे ब्रहमलोक से निकल पड़े. कृष्ण के द्वारे पहुंचकर उन्होनें दरबान से बडऋे गर्व से कहा कि अंदर जाकर कृष्ण से कह दो कि ब्रम्हा जी मिलने आये है. दरबान ने कहा भगवान एक मीटिंग में व्यस्त है समाप्त होगी तो आपका संदेश पहुंचा दूंगा. आपको कुछ प्रतीक्षा करनी पड़ेगी. ब्रम्हाजी को अपने पद का गर्व था. उन्होंने डांटते हुए कहा कि तुम मीटिंग में ही जाकर मेरा संदेश दे दो कि ब्रम्हाजी तुरंत मिलना चाहते है दरबान ने अंदर जाकर ऐसा ही कह दिया कि कोई ब्रम्हाजी बड़े घमंड से कह रहे है कि वे तत्काल प्रभु आपसे मिलना चाहते हैं. कृष्ण ने कहा कौन से ब्रम्हा मिलना चाहते हैं? द्वारपाल ने बाहर आकर कहा प्रभु पूछ रहे है कि कौन से ब्रम्हा आये है? ब्रम्हाजी आश्चर्य चकित हो गये कि मैं ब्रम्हा तो एक ही हूँ. द्वारपाल से कहा कि जाकर कह दो ब्रम्हा तो एक ही हैं. द्वारपाल ने जाकर ऐसा ही कह दिया. इस पर कृष्ण ने कहा अंदर ले आओ. आदेशानुसार उसने ब्रम्हाजी को अंदर पहुंचा दिया. अंदर जाकर ब्रम्हाजी देखते हैं कि वहां तो ब्रम्हाओं की ही मीटिंग चल रही है. उनका घमंड चकनाचूर हो गया और वहीं से प्रभु को प्रणामकर ब्रम्हलोक को लौट गये.

घनश्याम दास गुप्ता, भोपाल

::

अदाब अर्ज

भला जो देखन मैं चला, देखे भले अनेक।
जो दिल खोजा आपना, मुझ-सा भला न एक।

ठगधन, मगधन, लूट्धन, और रतन धन खान।
जब आ जावे ब्लैक-धन, सब धन धूरि समान।।

असली विद्यार्थी वही, पहिने नैरो पैण्ट।
इधर-उधर घूमा करे, कक्षा में अबसेण्ट।।
प्रोफेसर कहलाय जो, टाई-कोट चढ़ाय।
ट्यूशन करने में निपुण, छात्रों को बहकाय।।

माडर्न वह गर्ल है, देखत मन ललचाय।
सैण्डिल ऊँची पहन के फुदक-फुदक बल खाय।।

वैरागी, त्यागी वही, जो भूखा रह जाये।
कौड़ी-कौड़ी जोड़कर, रोज सिनेमा जाय।।

उमाशंकर दुबे 'मनमौजी, म.प्र

::

आदिम युग को जा रहा, अब सारा संसार।
तन पूरा नंगा हुआ, आखेटी व्यवहार।।

महल बने ऊँचे-बड़े, दिल का लघु आकार।
रिश्तों-नातों में नहीं, पहले-सा व्यवहार।।

ऊँची-ऊँची डिग्रियॉ, प्रेम का पर ना ज्ञान।
करुणा, ममता चीज़ क्या, नहीं किसी को भान।।

यंत्रों-सा जीवन हुआ, यंत्रों जैसा भाव।
भौतिकता ने रच दिया, विकृत नव बर्ताव।।

फैशन और मॉडर्निटी, भेड़ चाल है खूब।
संस्कार की अब नहीं, उगती कोमल दूब।।

चारों तरफ प्रकाश है, अंतर्मन अंधकार।
उजियारा किस काम का, जब भीतर धिक्कार।।

आस्तीन में सांप है, स्वारथ का है दौर।
छूरे चलाते पीठ पर, कपटी के सिर मौर।।

प्यार, वफा, अपनत्व सब, बीते युग की बात।
मीठी बानी बोलकर, करे मनुज आघात।।

अपनी ढफली ठोककर, गुंजा रहो निज ताल।
हर पल अब इनसान की, बदल रही है चाल।।

क़दम भले ही बढ़ गये, मूल्य नहीं पर शेष।
इस युग को अब क्या कहें, चारों ओर क्लेश।।

प्रो. डॉ0 शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

कोई विषय जब विवादास्पद नहीं रहता तो लोग उसमें दिलचस्पी खो बैठ्ते है.

विलियम हेज़लिट

दोहरे मापदण्ड

हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर,उ०प्र०

- दोहरा मापदण्ड हज यात्रियों और तीर्थ यात्रियों के साथ देखने में आता है
- जनता असुरक्षित और जनप्रतिनिधि अंगरक्षकों तथा कमाण्डों की सुरक्षा घेरे में।
- मंत्री, सांसद, विधायक या नेता कोई घोटला करते हैं तो उन्हें जमानत भी फौरन मिल जाती है और मुकदमा ठण्डे बस्तें में पड़ा रहता है और जनता एक छोटे से घोटाले में भी पापड़ बेलते-बेलते मर जाती है.

यह कलयुग है और इसमें प्रत्येक व्यक्ति चेहरे पर नकाब लगाये घूम रहा है. सबकी कथनी और करनी में अंतर स्पष्ट दिखायी पड़ता है और भारत वर्ष के नेताओं के तो बुरे हाल है इनके एक चेहरे पर कितने हैं. इसका आसानी से अंदाजा नहीं हो सकता. सबने दोहरे मापदण्ड अपना रखे हैं. अमीर के साथ बरताव भिन्न है. गरीब के साथ बरताव भिन्न है. एक ही प्रश्न पर अलग-अलग व्यक्ति को अलग-अलग उत्तर दिये जाते है.

आतंकवाद के संदर्भ में विदेशी आतंकवादियों के साथ बरताव दूसरा है और हाल ही में देखने में आया है साध्वी प्रज्ञा को आतंकवादी मानते हुए जिस प्रकार का बरताव किया गया वह चौकाने वाला था. किसी भी पकड़े गये आतंकवादी का नार्को टेस्ट नहीं हुआ. साध्वी प्रज्ञा का नार्को टेस्ट भी कराने की बात प्रकाश में आयी. पकड़े गये आतंकवादी जो निश्चित रुप से पाकिस्तान के कब्जे के कश्मीर से आते है उनके साथ इतनी पूछताछ नहीं होती उनके नार्को टेस्ट नहीं होते और उनकी मेहमानबाजी जेलों में बड़ी निष्ठा से की जाती है. साध्वी प्रज्ञा के अनुसार उससे कड़ी पूछताछ तो की गयी उससे अमर्यादित आचरण भी किया गया. यह दोहरे मापदण्ड का एक नमूना है.

बम्बई से उत्तर भारतीयों को निकालने का अभियान आ आवाहन राज ठाकरे ने किया और मनसे के डर से हम मन मारकर बैठ गये. रेलवे की परीक्षा देने से उत्तर भारतीयों को रोका गया. मारपीट की गयी और सरकार उत्तर भारतीयों के समर्थन में कुछ नहीं कर सकी. पटना के एक बालक को पुलिस ने मार गिराया क्योंकि वह राज ठाकरे से मिलना चाहता था और पुलिस राज ठाकरे की नजरों में हीरो बनना चाहती थी. महाराष्ट्र सरकार ने मराठों और उत्तर भारतीयों के साथ व्यवहार में दोहरा मापदण्ड अपनाया. अखण्ड भारत को खण्ड-खण्ड होते महाराष्ट्र सरकार देखती रही.

ऐसा ही दोहरा मापदण्ड हज यात्रियों और तीर्थ यात्रियों के साथ देखने में आया है. प्रत्येक हज यात्री को एक मोटी राशि सरकार की ओर से दी जाती है. अपने ही देश के यात्रियों को न कोई सुविधा न अनुग्रह राशि है और हज यात्रा पर जाने वाले यात्रियों को ठहरने के लिए हज हाउस भी निर्मित किये गये है. दोहरे मापदण्ड का इससे गम्भीर उदाहरण और क्या हो सकता है.

यदि सुरक्षा व्यवस्था पर विचार करें तो देश का प्रत्येक नागरिक असुरक्षित है. सड़के, रेलें, बस, वायुयान कहीं पर भी विस्फोट हो सकते हैं. नागरिकी सुरक्षा का कोई पुख्ता प्रबन्ध ा नहीं है जबकि प्रत्येक मंत्री, सांसद, विधायक और विशिष्ट नेताओं की सुरक्षा के प्रबन्ध हैं. जनता असुरक्षित और जनप्रतिनिधि अंगरक्षकों तथा कमाण्डों की सुरक्षा घेरे में. कानून बनाने वालों का यह दोहरा चेहरा साफ नजर आता है. मंत्री, सांसद, विधायक या नेता कोई घोटला करते हैं तो उन्हें जमानत भी फौरन मिल जाती है और १०-२० साल तक मुकदमा ठण्डे बस्तें में पड़ा रहता है या तो वह सरकार द्वारा वापस ले लिया जाता है अथवा गवाहों और गवाहियों के मिट जाने के फलस्वरुप अदालत में ही समाप्त हो जाता है. घोटाला यदि जनता करती है तो प्रथम तो जमानत ही नहीं ही मिलेती और यदि मिल गयी तो मुकदमें में जनता की घिसायी पिटाई खूब होती है. सीबीआई द्वारा घोटाला प्रमाणित होने पर भी नेताओं के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं होती. सब खुले घूमते रहते है और जनता एक छोटे से घोटाले में भी पापड़ बेलते-बेलते मर जाती है.

कचहरी में स्टाम्प उपलब्ध नहीं है. डाकखाने में पोस्टकार्ड उपलब्ध नहीं है और सरकारी स्टेशनरी बढ़े हुए मूल्य पर उपलब्ध हो रही है. स्टाम्प की बिक्री में जो रोज एक प्रकार से घोटाला हो रहा है उसमें कोई कदम नहीं उठाया जाता.

बिजली की आपूर्ति के अनेक मापदण्ड है. बिजली कर्मचारियों को

असीमित बिजली निशुल्क उपलब्ध रहती है. सघन बसे हुए मुहल्लों में लोग कटवे डालकर बिजली का उपयोग करते हैं, बिजली की चोरी रोज होती है, बिजली की कटौती रोज होती है, किसानों के बिजली के बिल माफ कर दिए जाते हैं और बेचारी साधनहीन जनता का बिजली का बिल वांछित से अधिक आने पर भी उसका भुगतान करने को विवश की जाती है. अन्यथा उसकी बिजली काट दी जाती है. वहां जाने से भी डरते हैं और शरीफ आदमी के घर बिजली विभाग वाले मय स्टाफ और पुलिस के छापा मारने को तत्पर रहते हैं.

साहित्यकार के साथ भी दोहरे मापदण्ड अपनाये जा रहे है जो वास्तव में साहित्यकार है उनकी उपेक्षा की जा रही है और जो मंच पर अपना कंठ स्वर प्रभावी रखते हैं और वास्तविकता और सत्यता से परे जाकर काव्य पाठ अथवा ग़ज़ल सुनाते हैं उनका सम्मान किया जा रहा है. जो वास्तविक बात करता है, जो देश की बात करता है ऐसे साहित्यकार उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं. एक प्रशासनिक अधिकारी जो सेवानिवृत्त हो चुके हैं और कई संस्थाओं के अध्यक्ष भी रह चुके है के काव्य पाठ को सुनने का अवसर मिला उन्होंने जो लिखा था उसे कविता कहा ही नहीं जा सकता किन्तु वह वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी रह चुके हैं. अतः उनके सम्मान स्थान-स्थान पर हो रहे है. उनको पद्मश्री की उपाधि देने की तैयारी भी की जा रही है. यदि वह प्रशासनिक अधिकारी न होकर केवल जन कवि होते तो शायद कोई उन्हें सुनना भी पसन्द नहीं करता.

बेरोजगारी के मामले में भी सरकारी नीति दोगली और दोहरी है. एक ओर तो बेरोजगारी के कारण परिवार के परिवार भूख से मर रहे हैं अथवा आत्महत्या कर रहे है. दूसरी ओर एक ही परिवार में पति-पत्नी पुत्र और पुत्र चारों को नौकरी मिली हुई है. बेरोजगार नौजवान जिनमें योग्यता भी है प्रतिभा भी है वह दर-दर की ठोकरे खा रहे हैं और दूसरी ओर अनुग्रह के आधार पर सेवा निवृत्त व्यक्तियों को पुर्ननियुक्ति दी जा रही है. यदि जितने रिक्त स्थान सरकारी कार्यालयों में उपलब्ध है उन सभी पर भर्ती कर दी जाये तो देश में एक भी बेरोजगार नहीं मिलेगा.

मंत्रियों की सम्पत्ति एक सत्र में मंत्री रहने के बाद ३ बीघा जमीन से ३०० बीघा जमीन तक पहुंच जाती है. मंत्री जी के जन्म दिन पर भेंट देने के लिए जनता से चन्दा किया जाता है. चन्दा न देने पर मारपीट की जाती है और कोई नहीं पूछता. क्योंकि मामला सत्ता का है. लेकिन जन साधारण के बीच में यदि किसी व्यक्ति के पास आय से अधिक सम्पत्ति होना प्रमाणित हो जाता है तो आयकर विभाग उससे पूरा वसूल कर लेता है. जबकि मंत्रियों और नेताओं के मामले में आयकर विभाग या तो मुकदमा ही दायर नहीं करता अथवा आरोपित आयकर माफ कर दिया जाता है. यदि किसी प्रकार से यह साबित हो भी गया कि मंत्री जी के पास उनकी आय से कहीं अधिक सम्पत्ति उपलब्ध है तो भी उनको कोई नहीं पकड़ता या तो सीबीबाई हाथ डालते हुए डरती है अथवा अदालत से उन्हें मुक्ति मिल जाती है. यही कारण है नेताओं की सम्पत्ति एक सत्र में कई सौ करोड़ हो जाती है. जबकि मंत्री बनने से पूर्व उनके वास केवल ३ बीघा जमीन ही थी.

राजनेताओं के, मंत्रियों के टेलीफोन व बिजली के बिल लाखों रुपये में बिना भुगतान के लम्बित रहते हैं. ५-५ वर्ष तक टेलीफोन और बिजली के बिलों को भुगतान नहीं होता और यह सुविधा समाप्त नहीं होती. जबकि जनता का यदि एक एक वर्ष का बिल भी लम्बित हो जाये तो टेलीफोन अथवा बिजली कनेक्शन काट दिया जाता है. जनता और जनप्रतिनिधि के साथ यह दोहरा मापदण्ड नहीं होना चाहिए. यदि जनप्रतिनिधि के टेलीफोन और बिजली के बिल माफ किये जा सकते हैं अथवा ५-५ साल तक लम्बित रक्खें जा सकते है तो यह सुविधा जनता को भी उपलब्ध होनी चाहिए.

कर्जा माफी के संबंध में भी सरकार के दोहरे मापदण्ड है. किसानों के कर्जे, नेताओं के कर्जे तुरन्त माफ कर दिये जाते है जबकि जनता के कर्जे माफ करने का कोई प्राविधान नहीं है. जनता के कर्जे के विरुद्ध वसूली की कार्यवाही, कुड़की तथा जेल जाने तक की कार्यवाही होती है जबकि आजतक किसी भी नेता को या मंत्री को कर्जे न चुकाने के कारण जेल जाते नहीं देखा गया. इस तरह के दोहरे मापदण्ड से सरकार की स्थिति जग जाहिर होती है. विदेशी हम पर उंगलियॉ उठाते हैं.

सबसे बड़ा दोहरा मापदण्ड आरक्षण और तुष्टीकरण के माध्यम से जाहिर होता है. अल्पसंख्यकों को तथा अनुसूचित जाति व जनजाति के लोगों को जो सुविधाएँ उपलब्ध है और आरक्षण के माध्यम से जिस तरह प्रतिभाओं को कुंठित किया जा रहा है. वह किसी से छिपा नहीं है. योग्यता का कोई मापदण्ड नहीं है. सवर्ण बच्चा ६० प्रतिशत अंक लाये तब भी कुछ कक्षाओं में उसे दाखिल नहीं मिलता. नौकरी में भी दिक्कत आती है. किन्तु आरक्षित व्यक्ति यदि ३३ प्रतिशत अंक भी लाता है तो भी उसे दाखिला मिल जाता है और नौकरी भी मिल जाती है। समाज में व्याप्त आरक्षण और तुष्टिकरण सरकार के दोहरे मापदण्ड का परिणाम है.

हमारे संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करने का प्राविधान है

कैरियर

सकरात्मक सपने देखिए

विवेक रंजन श्रीवास्तर्व,
जबलपुर, म.प्र.

सामान्यतः सपने नींद में आते है और इस प्रकार के सपनों पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता.

दूसरे ऐसे सपने होते हैं जो हम जाग्रत अवस्था में देखते हैं जिन्हें हम कभी भी, कहीं भी देख सकते हैं.

सपने देखना मानवीय स्वभाव है, यह मानवीय विशेषता ही नहीं सामर्थ्य भी है. सामर्थ्य इसलिये कि हम स्वयं भीा सपनों को आमंत्रित कर सकते है, किसी व्यक्ति, घटना, मौसम, व्यवहार विशेष के सपने देखना चुन सकते है. आप कहेंगे कि सपने तो स्वयं आते है उन पर हमारा नियंत्रण कहां जो हम तय कर सके कि हमें किस तरह का सपना देखना हैं. आप की बात भी सही है, लेकिन यकीन कीजिये आप सपने कहीं भी, कभी भी देख सकते हैं, आवश्यक है कि आप सपने देखना जानते हों और इस काम में आनंद प्राप्त करते हों.

सामान्यतः सपने नींद में आते है और इस प्रकार के सपनों पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता. ऐसे सपने किसी भी कारण से आ सकते हैं, चूंकि सपने मस्तिष्क द्वारा देखे जाते हैं इसलिये हमारा निंद्रा में होना बाधक नहीं, बल्कि सहायक हो जाता है. नींद में आने वाले सपने हमारी तात्कालिक मानसिक दशा के अनुरुप होते हैं और सामान्यतः अनियंत्रित होते हैं जब हम निंद्रा में होते है तब भी हमारा मस्तिष्क विभिन्न चित्र बनाता रहता है जो चलचित्र के समान बदलते रहते हैं, जिसमें अक्सर अस्पष्ट, और विचित्र घटनाएं, संवाद और रंगीन अथवा रंगहीन आकृतियां हो सकती है. ये स्वप्न मनोविज्ञान का विषय हैं. दूसरी ओर ऐसे सपने होते हैं जो हम जाग्रत अवस्था में देखते हैं जिन्हें हम कभी भी, कहीं भी देख सकते हैं, वास्तव में ऐसे सपने पूर्णतः सपने न होकर विचार-मग्न होने की उच्चतम अवस्था होते हैं जिसमें हम भविष्य की कार्य योजना बनाते हैं, ऐसा हम अपना काम करने के दौरान भी बिना किसी बाधा के कर सकते है. सपने देखने और सपने आने में यही बुनियादी अंतर हैं जो सपने देखने की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण बनाता है.

आखिर यह सपने देखना होता क्या है? सपने देखने का मतलब दिवास्वप्नों से नहीं है जो मानसिक जुगाली से ज्यादा कुछ भी नहीं, आशय है उन वैचारिक सपनों से, जो गहन मंथन और किसी संभावित कार्य व उद्देश्य के प्रभावों का पूर्व आकलन करते है जिसे अंग्रेजी भाषा में 'विज्युलाइज' करना कहा जाता है. अर्थात सपने सृजन करने से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसमें किसी कार्य को करने का संकल्प हो तथा उस कार्य को होते हुए 'विल्युलाईज' किया गया हो. हम यह भी कह सकते है कि ऐसे सपने देखना एक रचनात्मक कार्य है और ये सपने देखने के लिए दूरदृष्टि, उमंग, उत्साह और साहस की आवश्यकता होती है. ये सपने आपकी कार्य क्षमता को बहुगुणित कर देते हैं, आसन्न कठिनाईयों के प्रति सचेत कर आपकी कार्य योजना को परिष्कृत कर देते हैं, तो आप भी देखिये कुछ ऐसे सकरात्मक सपने, और जुट जाइये उन्हें सच करने में.

किन्तु अभी तक गाड़ी अटकी हुई है और जिस प्लेटफार्म पर हिन्दी की गाड़ी को आना था उस पर अंग्रेजी की गाड़ी खड़ी हुई है और हटने का नाम नहीं ले रही. स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरु, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिराजी, सोनियाजी आदि सभी हिन्दी के समर्थक है. किन्तु हमारे प्रध ाानमंत्री और राज्यपाल अधिकांश अंग्रेजी में बात करते है. उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय में सारा काम अंग्रेजी में होता है. डॉ० अपना पर्चा अंग्रेजी में बनाता है. घरों में वही बच्चे योग्य माने जाते हैं जो अंग्रेजी बोलते है. हिन्दी मात्र भाषा है. लेकिन अंग्रेजी के नीचे हैं. प्रशासनिक अधिकारी की परीक्षा और नौकरी में भी अंग्रेजी का ही बोलबाला है. हिन्दी या भारती कहीं दिखायी नहीं देती. प्रान्तों में बड़े-बड़े बोर्ड और होर्डिग या तो प्रान्तीय भाषा में मिलते है अथवा अंग्रेजी में। उत्तर प्रदेश और दिल्ली से बाहर जाते ही हिन्दी का नाम पट दिखायी नहीं देता.

हम दोहरे मापदण्ड के आदि हो गये है और यह बीमारी कदापि राष्ट्रहित में नही हैं. यह व्यक्ति-व्यक्ति के बीच में खाई उत्पन्न कर रही हे. यदि दोहरे मापदण्ड समाप्त नहीं किये गये तो प्रतिभाएं कुंठित हो जायेगीं अथवा पलायन कर जायेगी और देश की संस्कृति नष्ट हो जाएगी. संस्कृति ही किसी देश की पहचान होती है. यदि वही नष्ट हो जायेगी तो क्या बचेगा. अतः देश को बचाने के लिए संस्कृति को बचाने के लिए हमें दोहरे मापदण्ड त्यागने होगें.

मुद्दा

देश पर गहरे संकट के कारण एवं बचने के उपाय

✍ **रेणु सूद**, पालमपुर

इस समय पाकिस्तान आतंकवाद का पर्याय बना हुआ है एवं अमेरिका बाजारवाद का पर्याय बना हुआ है. एक अति शक्तिशाली देश है एवं दूसरा अति कमजोर देश है. दोस्ती दो समान स्तरों में होती है. लेकिन इन दो असमान स्तरों के देशों में दोस्ती है. अमेरिका ने पाकिस्तान को अकूत धनसंपदा प्रदान की. किसलिए? आतंकवाद की फसल तैयार करने के लिए. कश्मीर नामक क्षेत्र भारत पाकिस्तान की झगड़े की जड़ है तो इसे खादपानी अमेरिका ने ही दिया है, अन्यथा पाकिस्तान में इतना दम नहीं था कि वह इस समस्या को इतनी देर उलझाए रखता. आज पाकिस्तान पूरी तरह अमेरिका के रहमों करम पर जीवित है. यों कहिए कि मृत पाकिस्तान को आक्सीजन अमेरिका प्रदान कर रहा है. जब तक अमेरिका इसे आक्सीजन प्रदान करता रहेगा, पाकिस्तान जिंदा रहेगा.

अमेरिका आतंकवाद के बहुत खिलाफ नजर आता है. उसने आतंकवाद के विरुद्ध सतत युद्ध की घोषणा कर रक्खी है. आतंकवाद के नाम पर उसने अफगानिस्तान कौ रौंद दिया, इराक को रौंद दिया अब उसे ईरान आतंकवादी नजर आ रहा है. लेकिन पाकिस्तान पर मेहरबानी क्यों? बड़ा विकट प्रश्न है. बार-बार ये खबरे आती है कि अमेरिका का कट्टर दुश्मन ओसामा बिन लादेन पाकिस्तान में छुपा है. लेकिन अमेरिका ने पाकिस्तान पर धावा नहीं बोला, न ही इन खबरों की जड़ टटोलने के लिए गंभीर प्रयास किए गए. क्या वास्तव में ओसामा अमेरिका का दुश्मन है?

> ✍ इस समय पाकिस्तान आतंकवाद का पर्याय बना हुआ है एवं अमेरिका बाजारवाद का पर्याय बना हुआ है.
>
> ✍ कश्मीर नामक क्षेत्र भारत पाकिस्तान की झगड़े की जड़ है तो इसे खादपानी अमेरिका ने ही दिया है,
>
> ✍ लादेन का आतंक अमेरिकी अर्थव्यवस्था का प्राणतत्व है.
>
> ✍ आतंकवाद इस्लामियत का हिमायती है एवं बाजारवाद ईसाईयत का हिमायती है.भारत में अलगाववादी ताकते हावी है, हर राजनैतिक दल इनके आगे घुटने टेकने को विवश नजर आ रहा है.
>
> ✍ बहुसंख्यक हिन्दू दीनहीन क्यों?

अमेरिका बाजारवाद का जनक है. अमेरिका की अर्थव्यवस्था की नींव हथियार उद्योग पर टिकी है. हथियारों का प्रयोग आतंकवादी करते है या फिर आतंकवाद की रक्षा के लिए देश की सेनाएं, पुलिस इनका प्रयोग करती है. जितना आतंकवाद फैलेगा, उतना ही हथियार उद्योग का बाजार चमकेगा. आतंकवादियों को भी इसकी जरुरत होगी एवं देश की सुरक्षा करने वाली ताकतों को भी. इससे अमेरिका की अर्थव्यवस्था दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करेगी. यदि ओसामा मर गया, तो आतंकवाद की फसल कौन तैयार करेगा? उसकी मौत से अमेरिका की अर्थव्यवस्था लुढ़क सकती है. इसी कारण अमेरिका की नज़र में न तो पाकिस्तान आतंकवादी देश है, न ही अमेरिका जैसा शक्तिशाली देश लादेन जैसे एक आतंकवादी मार सका, चाहे दिखाने के लिए उसने पूरी शक्ति लगा दी हो. लादेन का आतंक अमेरिकी अर्थव्यवस्था का प्राणतत्व है. इन दो देशों के आचरण को देख कर पता चलता है कि आतंकवाद एवं बाजारवाद एक दूसरे के पूरक है. एक महादैत्य का पेट है तो दूसरा उसकी पीठ है. महादैत्य पर प्रहार करने की ताकत किसी देश में नही हैं. आतंकवाद इस्लामियत का हिमायती है एवं बाजार वाद ईसाईयत का हिमायती है. विकृत इस्लामियत जेहाद अर्थात् सामूहिक नरसंहार का आदेश दे रही है एवं जगह जगह बम फूट रहे है. विकृत ईसाईयत धर्मान्तरण में मशगूल है. इस प्रकार ईसाईयत एवं इस्लामियत एक दूसरे के घोर शत्रु होते हुए भी एक दूसरे की रक्षा करने को विवश है. इसाईयत मुस्लिम देशों की तरफ धर्मान्तरण का दुष्चक्र नहीं रचती. लेकिन यह भारत पर पूरी तरह आक्रमक हे क्योंकि यहॉ हिन्दू जनता का बाहुल्य है.

आज भारत पर अलगाववादी

ताकते हावी है, धर्मान्तरण करवाने वाली ताकते हावी हैं. हर राजनैतिक दल इनके आगे घुटने टेकने को विवश नजर आ रहा है. भारत में बहुसंख्यक हिन्दू धर्म के लोग है. लेकिन हर कोई राजनैतिक दल हिन्दू धर्म के प्रति संवेदनहीन नजर आता है. इसका कारण क्या है? यदि भारत में लोकतान्त्रिक व्यवस्था है तो किसी दल में हिन्दुओं की वोटों के प्रति आकर्षण क्यों नहीं? इसका मोटा सा कारण यहीं कहा जा सकता है कि हिन्दू धर्म के लोग असंगठित है, प्रसुप्त है, जातिभेद में बंटे है. लेकिन फिर भी इतनी बड़ी जनसंख्या की उपेक्षा इन्हीं कारणों से नहीं की जा सकती. इसके बहुत से रहस्य है. हिन्दू उपेक्षा भारत में तो चल रही है लेकिन जहॉ जहॉ हिन्दू है, उनका दमन चरम पर है. आप मलेशिया, नेपाल, इन्डोनेशिया के हालात देख लीजिए, हर स्थान पर हिन्दूओं को मिटाने का अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहा है.

भारत में हिन्दू उपेक्षा क्यों? हिन्दुओं का तिरस्कार क्यों? बहुसंख्यक हिन्दू दीनहीन क्यों? यदि देश में हिन्दुओं का दमन होता है तो कहीं से कोई आवाज नहीं उठती. जो व्यक्ति/संगठन/दल इसके विरुद्ध आवाज उठाता है, उसे साम्प्रदायिक सिद्ध कर दिया जाता है. लेकिन यदि मुस्लिम/ईसाई का दमन होता है तो सब तरफ हायतौबा मचती है, मीडिया की चीखपुकार सुनने को मिलती है. यहॉ तक कि विदेशियों से भी भारत सरकार को भर्त्सना सहनी पड़ती है. भारत की सरकार का भारतीय स्वाभिमान खो गया है, वह सब ताने सिर झुका कर सुनती है. समस्या की जड़ को समझे बिना वह हिन्दूओं की मौत पर चुप रहती हैं लेकिन दूसरे अर्थात ईसाई एवं मुस्लिमों की मौत पर कभी कहती है कि उसकी रातों की नींद गायब हो गयी या कह देती है कि ऐसी घटनाएं राष्ट्रीय शर्म का विषय है. अर्थात् भारत सरकार की कार्यप्रणाली को देख कर ऐसा लगता है कि ईसाई एवं मुस्लिम भारत के नागरिक है एवं हिन्दू पराए हो चुके है. इसके लिए हम आपके सामने हाल ही में घटी दो घटनाएं करे रख रहे हैं. एक घटना जम्मू में घटी एवं दूसरी उड़ीसा में घटी.

जम्मू कश्मीर में अमरनाथ श्राईन बोर्ड की जमीन को लेकर संघर्ष शुरु हुआ. इस संघर्ष में हिन्दू हित मुखर थे. इस संघर्ष में कई राष्ट्रवादी मुस्लिम एवं इसाई भी शामिल हुए. कुल मिला कर यह संघर्ष धार्मिक नहीं, राष्ट्रीय था. धार्मिक शब्द आज कट्टरवादी हो गया है, अन्यथा धर्म एवं राष्ट्र एक ही सिक्के के दो पहलू है. इस संघर्ष में भारतीय जनता हाथों में तिरंगा लिए 'भारतमाता की जय', 'बम बम भोले' के नारे लगाती जमीन की मांग करती. भारत सरकार ने ऐसे बर्ताव किया जैसे वहॉ की जनता प्राणहीन मुर्दा है. उन्हें अनाथ समझ कर केन्द्र सरकार मूकदर्शक बनी रही? संघर्ष दो महीने चलता रहा. जनता डण्डे खाती, गोलियां खाती, अश्रु गैस के गोले सहती, अडिग रही. उधर कश्मीर में जहॉ अलगाववादी ताकते हावी हैं. उन्होंने १५ अगस्त को अपना राष्ट्रद्रोही चेहरा निर्लज्जता से दिखाया. 'भारत को मौत आए' 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' ने नारे लगाए. पाकिस्तान का झण्डा शान से वहॉ फहराया जो प्रदेश कागजों में भारत का है. भारत सरकार चुप रही. क्या यह अपराध नहीं? भारत सरकार को यदि भारत के स्वाभिमान एवं सुरक्षा से कुछ लेना देना नहीं तो उसे कुर्सी पर बैठने का हक कैसे है? यहीं नहीं, हमारे महान गृहमंत्री पाटिल साहिब ने जम्मू के हिन्दुओं को अंगूठा दिखाते हुए कश्मीर के अलगाववादियों अर्थात मुस्लिमों से बड़ी सहानुभूति से पेश आए, सेब उत्पादकों से माल खरीदने का आश्वासन दिया, ट्रकों को सैन्य सुरक्षा, जम्मू में रहने वाले मुस्लिमों को नुकसान का मुआवजा दिया जाएगा, इत्यादि घोषणाएं की. उधर जम्मू के लोग भूखे प्यासे, बीमार तड़पते रहे, उनकी सुध किसी ने नहीं ली. उन्हें कोई मुआवजा देने की घोषणाएं नहीं हुई. भारत सरकार के साथ-साथ अलगाववादियों की तकलीफ का अहसास पाकिस्तान को हुआ. उसने भारत सरकार को खरी खोटी सुनाई एवं भारत सरकार ने सिर झुका कर सुनी. एक अति निर्बल देश भारत को धमकाने की ताकत रखता है तो किसके दम पर? भारत सरकार सुनती है तो किस विवशता के कारण?

हमें इन सब बातों पर ध्यान देना होगा. यदि हम स्थिति का अच्छी तरह विश्लेषण कर सके तो हमें बहुत कुछ समझ आ सकता है. आप देख रहे है कि सिमी अथवा इंडियन मुजाहिदीन नाम के संगठनों का हाथ जगह-२ बम विस्फोटों में साबित हो चुका है. पकड़े गए आतंकवादियों ने अपनी नारको टेस्ट में इसे स्वीकार किया है. लेकिन फिर भी भारत के राजनेता सिमी की पैरवी कर रहे है. देश का प्रधानमंत्री पुलिस को हिदायत दे रहा है कि आतंकवाद के नाम पर वर्ग विशेष को निशाना न बनाएं. इसका क्या मतलब? क्या इसका मतलब यह है कि यदि मुस्लिम होगा तो उसे छोड़ दे एवं हिन्दू होगा तो पकड़ लें. अर्थात जिस आतंकवादी को पकड़ा जाएगा, उससे पुलिस यह पूछेगी कि तुम्हारा धर्म कौन सा है? इससे अधिक धर्म नाम की शक्ति का क्या अपमान हो सकता है? लेकिन धर्म का अपमान करने के पीछे जो शक्ति लगी है वह है धर्मनिरपेक्षता. आपने देखा पुलिस इंसपेक्टर मोहन चन्द्र शर्मा की शहादत को पूरे देश ने सलाम किया, अश्रुपूर्ण विदाई दी लेकिन

भारत के हरामखोर राजनेताओं ने उसकी शहादत पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया. इसका मतलब है कि भारत की राजनीति आतंकवादियों के साथ मिली है. क्यों मिली है? क्योंकि इसे उनके माध्यम से अकूत धन मिल रहा है. इस धन के बल पर वह बार-बार सत्ता में आ रही है. चुनाव इसी कारण मंहगे होते चले जा रहे है. आतंकवाद के विरुद्ध कठोर कानून बनाने से आनाकानी इसी कारण हो रही है जबकि भारत की शत प्रतिशत साधारण जनता चाहती है कि कठोर कानून बना कर आतंकवाद का सिर कुचला जाए. प्रश्न यह है कि आतंकवादियों को धन कहॉ से मिल रहा है? यदि भारत में आतंकवाद को पाकिस्तान द्वारा चलाया जा रहा है तो पाकिस्तान तो स्वयं दिवालिया होने की कगार पर है. क्या आतंकवाद को बहुराष्ट्रीय कम्पनियां चला रही है या कोई और? यह सही है कि आतंकवाद पाकिस्तान द्वारा संचालित हे लेकिन पाकिस्तान की सहायता कौन कर रहा है जो भारत के राजनेताओं को खरीद रहा है एवं वे मुस्लिम तुष्टिकरण की सब हदें लांघ कर धन दे रहा है, इसी कारण वह अलगाववादियों को अपना रिश्तेदार मानता है एवं ये अलगाववादी पाकिस्तान के द्वारा भारत में आतंकवाद को भड़काया जा रहा है तो निश्चय ही इसकी सहायता परोक्ष रुप से विश्वबाजार की ताकतों द्वारा हो रही होगी.

दूसरी घटना उड़ीसा में घटी. सब जानते है कि उड़ीसा में धर्मान्तरण का धन्धा चरम पर है. लगभग ४० वर्षो से साधारण जनत की सेवा तन मन धन से स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती कर रहे थे. इससे धर्मान्तरण का धन्धा चौपट हो रहा था. उन पर कई बार मिशनरियों ने प्रहार किया, लेकिन वे बच गए. आखिर मिश्नरियों को सफलता मिली एवं लक्ष्मणानंद जी की हत्या हो गई. स्थानीय जनता उन्हें भगवान मानती थी. उनकी हत्या पर वह आगबबूला हो उठी एवं हिंसा भड़क गई. यह हिंसा साम्प्रदायिक रुप ले बैठी थी. हिन्दू एवं ईसाई दोनो मरने कटने लगे. चूंकि ईसाई भी मरने लगे सरकार हरकत में आ गई एवं उसने इन घटनाओं की भर्त्सना कड़े शब्दों में हीं नहीं की, बल्कि धारा ३५६ तक लगाने की धमकी दे डाली. उधर अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, ने भी ईसाइयों की हत्या का विरोध किया. ध्यान दीजिए उन्होंने जनता के आपसी कत्लेआम का नहीं, ईसाइयों की हत्या पर विरोध दर्ज किया. भारत सरकार डर गई. आज असम महाराष्ट्र में कितना खून खराबा हो रहा है, लेकिन सरकार मुर्दा बनी हुई है. क्योंकि वहॉ के हालात से उन्हें विदेशों में डराने धमकाने वाला कोई नहीं है. इससे आन्तरिक कुत्सित राजनीति फलफूल रही हैं एवं कई दलों को लाभ हो रहा हैं, कईयों को नुकसान. इसका मतलब निकाले? भारत को इसाई प्रधान देश क्यों आंखे दिखा रहे है? क्या भारत में रहने वाले ईसाई उनके देश के नागरिक है? या भोले भाले भारतीयों को ईसाई इन देशों ने खूब धन खर्च करके बनाया है? क्यों बनाया है? किसकी सहायता से बनाया है? स्पष्ट है कि इन देशों ने भारत की मिश्नरियों का निर्माण किया हैं. सहायता भारत की सरकार ने की है. सहायता इसलिए की है कि यह मिश्नरियां राजनैतिक दलों को खूब पैसा देती है, बदले में धर्मान्तरण के लिए खुली छूट मांगती है एवं राजनीति प्रदान करती है. राजनीतिक दल पैसे के बल पर चुनाव जीतते हैं लेकिन मिश्नरियों को क्या मिलता है? भारत की चर्च के पादरी विलासी जीवन बिता रहे है एवं उस षडयन्त्र का हिस्सा हे जो भारत की स्थानीय जनता को तबाह करके भारत में व्हाईट रेस का शासन स्थापित करना चाहते हैं. ऐसा ही शासन कोलम्बस ने अमेरिका के खण्डों को इकत्रित करके स्थापित किया गया था एवं वहॉ स्थानीय जनता को मार काट दिया गया थ. इसी कारण अमेरिका में व्हाईट हाउस बना है जिस में इस समय काला आदमी राष्ट्रपति बना है. भारत में व्हाईट रेस स्थापित करने का समय सन् २०५० तक तय किया गया है. मॉल संस्कृति, सेज इत्यादि इसी षडयन्त्र का हिस्सा है जिसमें भारत के बड़े-बड़े उद्योगपति एवं देशी-विदेशी कम्पनियां

> ✍ भारत का एक भी राजनैतिक दल मुस्लिम तुष्टिकरण को नकार कर सत्ता मे नहीं आ सकता. क्योंकि चुनावों को धन, आतंकवादी एवं धर्मान्तरण करवाने वाली संस्थाओं से आता है
>
> ✍ अपने प्रधानमंत्री पुलिस को आतंकवाद के नाम पर वर्ग विशेष को निशाना न बनाने की हिदायत देते है. इसका क्या मतलब?
>
> ✍ भारत की राजनीति आतंकवादियों के साथ मिली है. क्योंकि इसे उनके माध्यम से अकूत धन मिल रहा है.
>
> ✍ उड़ीसा में लक्ष्मणानंद जी की हत्या हुई और हिंसा भड़क गई. हिन्दू एवं ईसाई दोनो मरने कटने लगे. उधर अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, ने भी ईसाइयों की हत्या का विरोध किया, अन्य हत्याओं का नहीं?
>
> ✍ देशवासियों यदि हिन्दू मिट गया तो भारत मिटेगा.

शामिल है.

भारत का एक भी राजनैतिक दल मुस्लिम तुष्टिकरण एवं धर्मान्तरण को नकार कर सत्ता मे नहीं आ सकता क्योंकि भारत के मंहगे चुनावों को ध ान, आतंकवादी एवं धर्मान्तरण करवाने वाली संस्थाएं प्रदान कर रही हैं. इसी कारण भारत के बड़े बड़े लगभग प्रत्येक दल के राजनेताओं को आप बड़ी-बड़ी दाढ़ी वाले एवं बड़े बड़े चोगों वालों के सामने घुटनों के बदल झुके हुए प्रायः देख सकते हैं. इसी कारण भारत की राजनीति पर तुष्टिकरण एवं धर्मनिरपेक्षवाद का भूत सवार है. ऐसे में हिन्दू जनता तो अनाथ होगी ही. प्रश्न यह है कि भारत के साधारण मुस्लिम, ईसाई सबको मार दिया जाएगा उसके बाद इन हरामी राजनेताओं की भी बारी आएगी क्योंकि जो कुआ दूसरे के लिए खोदा जाता है, उसी में स्वयं को भी गिर कर मरना पड़ता है यह प्रकृति का शाश्वत नियम है.

कैसे करे देश की रक्षाः-देशवासियों यदि हिन्दू मिट गया तो भारत मिटेगा. आप देख रहे है जिस स्थान पर हिन्दू जनसंख्या कम हो गयी है वहाँ देश की सीमाएं असुरक्षित हो गई है. उन्हें भारत से अलग करने का षडयन्त्र चला हुआ है. भारत के राजनैतिक दल, मीडिया, बुद्धिजीवी, मानवाधिकार आयोग, न्यायाधीश उस षडयन्त्र का हिस्सा बने हुए है. ऐसे में देश की रक्षा के लिए हर नागरिक को आगे आने की आवश्यकता है. हम हर देशवासी का आवाहन करते है कि वे हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई का भेद त्याग कर राष्ट्र को बचाने के लिए आगे आएं. भारत में पल रहे षडयन्त्र को समझें. पिछले २००० वर्षो से यह विश्व विकृत इस्लामवाद एवं ईसाइयत के शिकंजे में है. आप विश्व का पतन देख लीजिए. प्रकृति का दोहन देख लीजिए. यदि हिन्दू नहीं तो भारत नहीं. भारत नहीं, विश्व मिट जाएगा. भारत का चिराग बुझने पर पूरी धरती अन्धकार में डूब कर मिट जाएगी. अतः भारतीयों तुम अपनी संस्कृति को समझों. तुम्हारे अंदर धर्म के नाम पर जो जड़ता प्रवेश कर कई है उसे उखाड़ फेंको. हम आपसे हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हैं कि आपका मन्दिरों के चक्कर काटने से, भगवान को सोने चांदी के जेवर चढ़ाने से, तीर्थो के परिक्रमा करने से, लंगर लगवाने से, जगराते करवाने से न तो तुम्हारा उद्धार होगा न ही इस देश का. यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारी आने वाली पीढ़ियां धर्मान्तरण एवं आतंकवाद का शिकार होकर गाजर मूली की तरह न कटे, स्वाभिमानी जीवन जीएं तो इन तथ्यों को अपनाएं-

१. संयमी जीवन जीएं

२. ग्रामीण क्रांति लाएं. लघु उद्योगों, गऊ सेवा के महत्व को समझें.

३. पशु पक्षी की रक्षा हेतु मांसाहार का त्याग करें.

४. पर्यावरण रक्षा हेतु अधिक से अधि ाक पेड़ लगाएं।

५. नदियों को प्रदूषण से बचाएं. पूजा सामग्री नदियों में न डालें. मूर्तियों को समूद्रों में न बहाए.

६. अशिक्षित जनता को समय दान देकर पढ़ाएं लिखाएं

७. विवाह पर धन व्यर्थ न करें. दहेज प्रथा का बहष्किार करें.

८. नारी सशक्तिकरण का प्रयास करें. लड़के लड़की में भेद न समझे.

९. बालको के चरित्रनिर्माण की युक्तियां खोजें.

१०. आयुर्वेद की रक्षा की जाए.

११. स्वालम्बन के लिए ग्रामीण उद्योगों को दें.

१२. अमीर लोग गरीब किसानों की सहायता करें, वैज्ञानिक निःशुल्क उन्हें कृषि रक्षा के देसी उपाय बताएं

१३. दूसरों को उपदेश देने की बजाए स्वयं आत्मसाधना के पथ पर दृढ़ हों.

१४. गऊ बध का पुरजोर विरोध करें. गोपालन से प्राप्त होने वाले लाभों को जान कर अपना ज्ञान गांवो में बांटे.

१५. स्वदेशी खान पान को वरीयता मिले.

यदि हम हिन्दू धर्म की पूर्णता को समझेंगे तभी अपने देश की रक्षा कर सकेंगें. यदि हमारा अपना चरित्रबल उठ गया तो हमें अभारतीय सरकार के दंश नहीं सहन करने पड़ेगें. इस देश में हर धर्म के लोग प्रेम से रहें, किसी के साथ पक्षपात न हो, तभी राष्ट्र एवं विश्व वसुन्धरा का अस्तित्व बच सकता है.

चुनाव

नेताओं के बीच में हो रहा चुनाव,
जीतेंगे या हारेंगे यह सोचकर, हो रहा है उनमें तनाव,
जनता की भलाई के लिए कुछ नहीं है बनाव,
जब जनता को मालूम होगा, तब करती है नेताओं का घेराव।

देश चलाने के लिए चाहिए, सुयोग्य पार्टी,
तब जनता को मिलेगी, किस्मत की रोटी,
पीने के लिए जनता को नहीं मिलता है, स्वच्छ पानी,
परंतु खाने के नेताओं को मिलता है, खैनी।

चुनाव के समय भाग दौड़ करते हैं, हर पार्टी के कार्यकर्ता,
लेकिन उनमें नहं है, कोई गुणवत्ता,
चुनाव प्रचार के लिए खर्च करते हैं नोट पत्ता,
कोई मरे या जीयें उनको चाहिये सत्ता

आर.मुत्थुस्वामी, दुर्ग, छ.ग.

मुद्दा

पर्यावरण संरक्षण: समस्या एवं समाधान

- अगर प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी क्रम में चलता रहा तो पर्यावरण का मनुष्य पर से आवरण उठ जायेगा.
- प्राकृतिक स्थलों का पर्यावरण पर्यटन की दृष्टि से अधिकाधिक दोहन. पशु-पक्षी एवं पेड़-पौधों से ज्ञात-अज्ञात स्तर पर गंभीर विस्थापन एक गंभीर खामोशी के साथ मानों मनुष्य मात्र को अंतिम चेतावनी देते प्रतीत होते है.
- विश्व के सभी पर्यावरणविदों को एकजुट होकर प्रयास करना चाहिए कि प्रदूषण के स्तर में संतुलन बना रहे. विभिन्न सरकारी एजेसियों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों तथा गैर सरकारी स्वयं सेवी संस्थाओं को इसके लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है.

डॉ० वीरेन्द्र सिंह यादव,जालौन, उ.प्र.

मानव जाति ने अपनी आवश्यकताओं एवं आकाक्षाओं की पूर्ति के लिए अपनी पहुँच तक के समस्त प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया है. वायु, जल, भूमि, वातावरण, जैव मंडल आदि मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते है.

आज की वैज्ञानिक प्रगति, प्रौद्योगिक उन्नति, अनुवांशिकी, कृषि, उद्योग आदि की उपलब्धता प्रकृति से ही संभव हो पायी हैं, किंतु मानव ने प्रकृति के अप्रकृतिक दोहन से इसके अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया है. यह सर्वविदित है कि जैवविविधता के उचित संरक्षण के लिए स्वच्छ पर्यावरण का होना अतिआवश्यक है, किन्तु वर्तमान में बढ़ते प्रदूषण के चलते कई प्राकृतिक जैव वनस्पतियों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है. संसाधनों के दोहन में सबसे बड़ी भागीदारी मनुष्य की ही रही है.

अधिकाधिक भौतिक साधन प्राप्ति की प्रत्याशा में प्राकृतिक तौर पर उपलब्ध संसाधनों का मनमाना दोहन किया गया, जिसके परिणामस्वरुप सूखा, बाढ़, महामारी, भूकंप, भूस्खन, ओजोन परत का नष्ट होना, ग्लोबल वार्मिग, अकाल जैसी प्राकृतिक आपदायें नित्य विकराल रुप धारण करती जा रही है.

अगर प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी क्रम में चलता रहा तो पर्यावरण का मनुष्य पर से आवरण उठ जायेगा. ऐसे में पर्यावरण संरक्षण ही एकमात्र उपाय बचता है.

पर्यावरण संरक्षण वर्तमान में विश्व के सम्मुख एक ज्वलंत समस्या बनता जा रहा है. वास्तव में देखा जाये तो पर्यावरण के संरक्षण का प्रश्न तभी से प्रारंभ हो चुका था जब मनुष्य ने प्रकृति का दोहन उसकी वहन क्षमता से अधिक मात्रा में करना प्रारंभ किया और इसकी शुरुआत औद्योगिक क्रांति के साथ हो गयी. प्रकृति से करोड़ों वर्षो में निर्मित सौगातें हमने कुछ सौ वर्षो में ही निकालकर उसकी छाती को क्षतविक्षत कर दिया है. आज मनुष्य के सम्मुख अस्तित्व का प्रश्न सुरसा की तरह मुंह बाएं खड़ा है. धरती के कवच ओजोन से लेकर पशु-पक्षी ओर पेड़-पौधे, सभी मानव की उपभोक्तावादी संस्कृति का शिकार होते जा रहे हैं. कटते पेड़, उजड़ते जंगल, धुंआ उगलती चिमनियां, धुएं का गुबार उड़ाते वाहन और विकास की इस अंधी दौड़ में आपके, हमारे और सबके द्वारा बढ़ती जा रही प्रकृति के प्रति उपेक्षा पर्यावरण संरक्षण की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है. संरक्षण की इसी चिंता में हमने कभी 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया तो कभी 'पृथ्वी दिवस'.

हम, आप और सरकार सभी ने दावे किये गये कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कुछ कदम हल भी कर लियें जायें. लेकिन आपके सामने है- नित प्रतिदिन पर्यावरण को लीलती प्रदूषण की सुरसा.

विश्व की कुछ घटनायें इस ओर स्पष्ट संकेत कर रही है कि सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है. एडियन ब्राउन हेज, समुद्रों में तेल टैंकरों का रिसाव, उत्तरी ध्रुव में बर्फ की चट्टानों की मोटाई का कम होना, हिमालय के ग्लेशियरों का पीछे सरकना, उत्तरी अमेरिका में ठंड के दिनों में औसत तापमान में वृद्धि, खाड़ी के देशों में बर्फ का गिरना आदि संकेतक इस ओर पुरजोर इशारा कर रहे हैं कि सब कुछ अनुकूल नहीं चल रहा है.

प्राकृतिक स्थलों का पर्यावरण पर्यटन की दृष्टि से अधिकाधिक दोहन और ऐसे स्थलों में प्राकृतिक रुप से रहने वले पशु-पक्षी एवं पेड़-पौधों से ज्ञात-अज्ञात स्तर पर गंभीर विस्थापन

एक गंभीर खामोशी के साथ मानों मनुष्य मात्र को अंतिम चेतावनी देते प्रतीत होते हैं कि यदि अब भी नहीं चेते तो बहुत देर हो जायेगी. कुछ आकंड़ों की ओर ध्यान दें तो स्थिति स्पष्ट हो जाएगी. प्रकृति की सबसे बड़ी देन कहे जाने वाले वन, सन् १६५० ई. तक मनुष्य द्वारा आधे खत्म किये जा चुके हैं. सिर्फ पिछले दशक १६६०-२००० में पृथ्वी से ६४० लाख हेक्टेयर के लगभग हरे भरे छतनार वृक्ष छीन लिए है. इसके फलस्वरुप पेड़-पौधों ओर जीव जंतुओं की कुल ज्ञात प्रजातियों में से ग्यारह हजार प्रजातियां विलुप्ति की कगार पर हैं, आठ सौ प्रजातियां बिल्कुल विलुप्त हो चुकी है और पांच सौ प्रजातियों की स्थिति संदेहास्पद है. विकासशील देशों में हर साल पचास-साठ लाख मनुष्य प्रदूषित वायु के कारण हुई बीमारियों से काल-कवलित हो जाते हैं.

अब प्रश्न यह उठता है कि पर्यावरण संरक्षण की समस्या एवं इसकी संभावना से निजात कैसे पाया जाये? पर्यावरण संरक्षण की गतिविधियों को मनुष्य की दिनचर्या का अंग बनाने के लिए आवश्यक है कि व्यापक जागरुकता कार्यक्रम अपनाया जाय. इस संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय के आदेश की अनुपालना सराहनीय है जिसे देश के स्कूली पाठयक्रम में अनिवार्य बना दिया गया है. इसी प्रकार प्राकृतिक परिवेश के संरक्षण से वहां के स्थानीय निवासियों को जोड़ा जाना भी अति महत्वपूर्ण है. उदाहरण के लिए राजस्थान के काले हिरण का संरक्षण विश्नोई जनजाति की सामाजिक मर्यादा का प्रश्न बनकर उभरा है. इन प्रयासों के साथ ही विभिन्न स्तरों पर सरकारी गैर सरकारी स्तर पर विश्वभर में पर्यावरण संरक्षण के लिए कुछ न कुछ क्रियाकलाप हो रहे हैं. सरकारी स्तर पर सन् १६६२ के रियो डि जेनेरों के पृथ्वी सम्मेलन में सम्मेलनों की परम्परा शुरु की, जिसकी ताजा कड़ी है सितम्बर २००० में जोहांसबर्ग में सतत् विकास पर आयोजित विश्वव्यापी सम्मेलन. यहॉ दुःख की बात यह है कि ये सम्मेलन महज गरमागरम बहस, प्रदर्शनों और रुठने मनाने का स्थल रह गये हैं. औद्योगिक दृष्टि से विकसित देश ग्रीन हाउस गैसों और कार्बन की कटौती पर राजी नही हैं क्योंकि यह उनके औद्योगिक हितों के खिलाफ है, भले ही इसके कारण दूसरें देशों की अम्ली वर्षा का अभिशाप झेलना पड़ता है. इन देशों द्वारा किये गए परमाणु परीक्षण तथा हालिया युद्ध ने भी पर्यावरण को काफी क्षति पहुॅचाया है. इन घटनाओं के साथ ही प्रयास जारी है. डब्ल्यू. डब्ल्यू.एफ., ग्रीन पीस, वर्ल्ड वॉच फोरम जैसी संस्थाएं बहुत कुछ कर रही है, जागरुकता बढ़ा रही है, जिसके माध यम से पशु-पक्षी तथा पेड़-पौधों के संरक्षण के साथ-साथ हवेल के शिकार को रोकने के लिए शिकारियों का पीछा कर उन्हें पकड़कर दंडित करवाने जैसे प्रयास विशेष रुप से अनुकरणीय है. उत्तरांचल का चिपको आंदोलन हो या केरल में साइलेंट बैली को बचाने की मुहिम हो या फिर शाकाहार प्रचार आंदोलन हो या ब्राजील के बरसाती वन को बचाने के लिए प्रयास हो, सभी सराहनीय है. भारत समेत विश्व के सभी पर्यावरणविदों को एकजुट होकर यह प्रयास करना चाहिए कि प्रदूषण के स्तर में संतुलन बना रहे. विभिन्न सरकारी एजेसियों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों तथा गैर सरकारी स्वयं सेवी संस्थाओं को इसके लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है. सिर्फ आन्दोलन करने और संगठन तैयार करना ही समस्या का समाधान नही हैं. पर्यावरण संरक्षण के इस महायज्ञ में जनता की भागीदारी की बात आती है. 'माता पुत्रों अहं पृथिव्या' का मंत्र देने वाले हमारे देश में पर्यावरण की रक्षा की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है. नदियों एवं पौधों की पूजा इसी की कड़ी है. अपनी संस्कृति के इस आदर्श का पालन करते हुए हमें चाहिए कि पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरुकता लाने हेतु स्थानीय स्तर पर संगठनों का निर्माण किया जाना चाहिए.

- व्यर्थ भूमि एवं सड़को के किनारे सामुदायिक सहयोग से वृक्षारोपण किया जाए.
- उर्वरकों का समुचित उपयोग, सघन खेती, उचित निकास तथा सिचाई व्यवस्था.
- जलमल निवारण उपचार के बाद ही जल को नदी में छोड़ना चाहिए ताकि नदी एवं जल स्रोत प्रदूषित न हों.
- सड़े गले ठोस पदार्थो का खाद के रुप में उपयोग
- सरकार द्वारा और अधिक राष्ट्रीय उद्यान तथा संरक्षित वन स्थापित करना.
- वर्षा जल का उचित प्रबंधन.
- पर्यावरण मित्र उत्पादों का प्रयोग किया जाए.
- प्लास्टिक के प्रयोग से यथा संभव बचना क्योंकि यह पर्यावरण का बहुत बड़ा शत्रु है.
- ऊर्जा सरंक्षण करना चाहिए साथ ही ऊर्जा के अनवीकरणीय संसाध नों के अधिकाधिक प्रयो का प्रयास किया जाना चाहिए.

निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि प्रकृति की ओर लौटो वर्तमान में पर्यावरण की समस्या का स्थायी समाध ाान है या यूॅ कहा जाए कि प्रकृति का संरक्षण ही मानव के दीर्घजीवी होने की गांरटी हैं.

अतः प्रकृति के संरक्षण को प्राथमिक लक्ष्य बनाकर किया गया विकास ही दीर्घावधि तक **शेष पृष्ठ ३० पर..**

कहानी

उखड़ी सिलाई

नरेन्द्र कुमार, नागपुर

शाम को जब मेरी पत्नी स्कूल से आई और आते ही नजरें चुरा बिस्तर पर लेट गई तो मैं समझ गया हो न हो उसे ऋण मंजूर नहीं हुआ है. मैने उसे चाय बनाकर दी और कहा 'उदास मत हो, हो जायेंगे तीस हजार का इन्तजाम. जहां तीन लाख खर्च किये वैसे ये भी मिल जायेगें रात को दिनेश से मिलता हूँ, व्यापारी है करवा देगा इन्तजाम. परन्तु पत्नि की काली सयाह ऑखें प्रश्न पूछती रही-मैंने कब कहा था घर बनाओं. क्या हमारी हैसियत भी थी की हम घर बना सकें, लोग क्या कहेंगें दोनो स्कूल टीचर और तीन कमरों का अपना मकान. आज 'अंश' याद आ रहा था.

मैं 'अंश' को भूला नहीं पाता था, लावारिस लड़का जो मेरे सामने ही प्राईमरी मिडील और इंजीनियरिंग कर सका. मुझे बाबू जी व पत्नि को माई कहकर पुकारता. कभी कुछ खाना हैं, कुछ कमी है तो वह बेझिझक मॉग लेता और कहता-'एक दिन ब्याज सहित लौटा दूॅंगा, और जो मेरा होगा वह आपका तो होगा ही आज आपका सब कुछ मेरा है. माई, मेरे मॉ-बाप नहीं हुये तो क्या हुआ, उन्होंने मेरी नरम उंगलियॉ नहीं पकड़ी तो क्या हुआ, उन्हेंाने मेरे बालों पर प्यार का हाथ नहीं रखा तो क्या हुआ, उन्हेंाने मुझे नाम देने में हिम्मत नहीं की तो क्या हुआ, आपने तो सब दिया. बाबू जी मे मुझे इस काबिल बना दिया कि मैं स्वतंत्र उड़ जाऊँ कहीं दूर. परंतु कितने अजीब होते है रिश्ते जिस धरा पर खड़े होकर हर वस्तु में मुझे लावारिस होने का भास होता है, दिल फटता है, मन रोता है वही आपकी छवि उभरकर आ जाती है, वात्सल्य की, जिद के सामने झुकती बूढ़ी चरमराती हड्डियों की, प्यार भरी माई की झिड़की की.' यही सब कहता जो आज याद आ रहा था, मैं सोच रहा था आज काश 'अंश' होता तो उधारी मिल ही जाती, परंतु नियति की रचना दो साल पहले ही मेरी आंखों के सामने सनकी आतंकवादियों के लावारिस बम से वह लावारिस मौत की गोद में कई टुकड़ो में बिखर गया. मैंने ही तो उसे अग्नि दी थी.

वह कई जेबों वाली एक पेंट और शर्ट उस बार मेरे लिये लाया और मुझे जबरदस्ती जोकर बना हंसता रहा.

बस यही कहता बाबूजी इसे पहनों या ना पहनों. कभी दुःखी हो जाओ या मेरी याद आये तो बस इसे निहारना मैं आपके सामने आ जाऊँगा, दुनिया बहुत छोटी है, बाबू जी आप चलो छोड़ों, नौकरी और मेरे पास बंगलौर चलो. परंतु हम कहॉ जाते आज याद आई तो उसे पेंट शर्ट को निकाल निहारता रहा और दुःख हलका करने के लिए उसे पहन पत्नि वंदना के सामने आया जिससे वह भी अपना दिल 'अंश' में डुबो दे.

मेरी पत्नी मुझे देख हंसने लगी, अंश की यादें निकाल न जाने कब तक बतियाती अगर उसकी नजर एक जेब की उखड़ी सिलाई पर न जाती उसने सिलने के लिये खड़े-खड़े हाथ बढ़ाया और सिलने लगी तो उस जेब में एक मुड़ा व सलीके से पिन अप छोटा लिफाफा निकाला. उसे खोला तो दो बसरन पहले लिखी 'अंश' की चिट्ठी तथा एक तोले की चेन, तीन तोले की सुन्दर नाजुक सोने का हार कान के बाले निकले और चिट्ठी में लिखा था,-'माई बाबू जी अगर मैं बताकर कुछ दूंगा आपको तो आप लेगें नहीं, आपको लगेगा मैं एहसान चुका रहा हूँ. पर माई आपका बेटा 'अंश' कमाई कर रहा है. और अपने मॉ-बाप को कुछ चरणों में दे रह हूँ, नहीं मत कहना. बंगलोर पहुँचकर मैं आपको फोन कर दूॅंगा. बेटा हूँ आपका यह एहसान न भूलना वरना लावारिस ही रह जाऊँगा. माफ करना आपका अंश अपना आपपर हक जताता हुआ.'

हमारी ऑखों में आंसु छलछला गये, काश वह मिलने न आता, तो मरता नहीं. आज हम पोती-पोते वाले हो जाते., उन्हें खिलाते. तब मैंने और पत्नी ने उस नजराने को गिरवी रख घर का काम पूरा करने का विचार किया और उसकी याद को, नजराने को ता-उम्र सीने से लगाने का प्रण किया. यह समझ दिनेश ने हमारी मानसिक स्थिति का जायजा ले एक स्टेम्प पेपर पर हमारी हमी ले वे सब नजराने हमारे पास ही रहने दिये. सच इंसानियत, इंसान को भावुक बनाकर रिश्ते बनाती है वरना कौन, कहॉ से आया किसके साथ रहा क्या मायने है. उखड़ी सिलाई ने पेंट से जो दिया था एक अनाम रिश्ता था.

करके याद

करके याद वे दिन बर्बादियों के।
दिल आज भी सीसक-२ रोता है।।
क्या मिले तुम्हें यूं रुसवा करके।
दिल आज भी यादों में खोता है।।
क्या हुआ उन कसमें वादों का।
जुनू अब भी ख्वाबों में सोता है।।
वक्त का मारा बदनसीबी कहके।
यहॉ रोज दामन अश्कों में धोता है।।
बिगड़ी तकदीर का है कैसा फसाना।
होके भी इसमें हरा जख्म होता है।

जय सिंह अलवरी, बल्लारी, कर्नाटक

अध्यात्म

बुद्धावतार

देवदत्त शर्मा 'दाधीच', जयपुर, राजस्थान

श्रीमद् भागवत के प्रथम स्कन्ध के तृतीय अध्याय में भगवान के अवतारों का विशद वर्णन हुआ है. जिसमें बुद्धावतार का भी उल्लेख है. इनको भगवान विष्णु के इक्कीसवें अवतारों के रुप में पूज्यनीय किया है.

ततः कलौ सम्प्रवृते सम्मोहाय सुरद्विषाम बुद्धों नाभान्नाजन सुतः कीकटेषु कीकटेषु भविष्यति।।

भगवान विष्णु स्वयं बुद्ध के अवतार हुए इसलिये उन्हें बुद्ध कहा गया है. हे भगवन्! दैत्य दानवों को विमोहित करने वाले, शुद्ध अहिंसा मार्ग के प्रवर्तक आप बुद्ध रुप को नमस्कार है. भागवतपुराण के अनुसार किसी देवता का मनुष्य आदि अथवा संसारी प्राणीयों के रुप में शरीर धारण करना ही अवतार है. पुराणों के अनुसार विष्णु के चौबीस अवतार है उनमें बुद्ध भी अवतार के रुप में हैं. आचार्य क्षेमेन्द्र ११वीं शती के परवर्ती जयदेव कवि ने क्षेमेन्द्र के ही अनुसार भगवान विष्णु के दस अवतारों में बुद्ध की परिगणना की है. दशावतार स्रोत में 'केशन धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे' आया है. कहाँ है कि बुद्ध रुप में अवतार लेकर कारुण्य जीव दया का विस्तार किया. भगवान बुद्ध ने सूर्य की तरह अपने ज्ञान के प्रकाश से सभी जीवों के अज्ञानान्धकार को दूर कर दिया है और दुःख, दैन्य, पाप आदि से मुक्त कर दिया है. आचार्य लक्ष्मणदेशि केन्द्र ने नगरवासी राक्षसों को जीतने के लिये चीपर धारण करने वालों बुद्धरुपधारी विष्णु को प्रणाम किया.

'पुरा पुराणामसुरान् विजेतु सम्भावयन् चीवरचिन्हवेहषम्
चकार यः शास्त्र ममोघ कल्पं ते मूलभूतं प्रणतोअस्मि बुद्धम।।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने विनय पत्रिका में दशावतार की स्तुति में भी भगवान बुद्ध का वर्णन किया है–

प्रबल पाखण्ड महि-मंडलाकुल देखि, निंधकृत अखिल मख कर्म-जालं
शुद्ध बौधकथन, ज्ञान-गुणधान, अज बौद्ध अवतार बंदे कृपालं।।

१२ वीं शती के वीर गाथा कालीन कवि चन्दरबरदाई ने भी अपने प्रसिद्ध महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' में भगवान बुद्ध को अवतारों की श्रेणी में माना है. ज्योतिषशास्त्र के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'वृहत्पाराशर हेरा शास्त्र' के द्वितीय अवतार कम-वर्णनाध्याय में विष्णु के दस अवतारों के साथ बुद्ध को बुद्धग्रह अवतार कहा है.

'रामोअवतार सूर्यस्य चन्द्रस्य यदुनायकः नृसिहों भूमिपुत्रस्य बुद्धः सोमसुलस्य च.

भगवान बुद्ध सनातन धर्म के अवतारी देवों में ही थे. वे करुणा और कृपा के अवतार थे. पशुहिंसा को रोकने के लिए वे बुद्ध का अवतार लेकर आये थे. उनके संबंध में बौद्ध-वांगमय के बोधिचर्यावतार, दिव्यावदान, ललित विस्तर एवं बुद्धचरित जैसे ग्रन्थ है. महाराज शुद्धोदन के कीकट देश ५६३ ई.पू. जन्में बुद्ध की माता महामाया इनके जन्म के ७ दिन बाद ही देहान्त हो गया. २६ वर्ष की आयु में सत्य की खोज में सन्यास लेकर कठोर तपस्या की. वट वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया. सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया और ४८३ ई.पूर्व में मृत्यु हो गई. सम्राट अशोक ने बुद्ध धर्म का सर्वाधिक प्रचार किया.

मानव मानव के हित में लग जाय तो आतंक एवं शोषण कम हो जायेगा, संसार स्वर्ग हो जायेगा.

ॐ ॐ सत्यं शरणं गच्छामि...

ॐ ॐ बुद्धं शरणं गच्छामि.

अर्थात ज्ञान की शरण में जाओ, समानता की शरण में जाओ. सबका मंगल, सबका हित, सबकी प्रसन्नता, सबकी सुरक्षा.

■ संसार में वैर से वैर कभी शान्त नहीं होता और अवैर से ही शान्त होता है, यही सनातन धर्म है.

■ प्रमाद में मत फंसो, काम में रत मत होओ, प्रमाद रहित ध्यान द्वारा महान सुख को प्राप्त होता है.

■ ताजे दूध की भांति किया पापकर्म विकार नहीं लाता, वह भस्म से ढकी आग की भांति दग्धा करता है.

■ कठोर वचन न बोलों, बोलने पर दूसरे भी तुम्हें बोलेगें, दुर्वचन दुखदायी होते है, इनके बोलने पर दण्ड मिलेगा.

■ पाप का सेवन न करें, प्रमोद से लिप्त न हो, झूठी धारणा का सेवन न करें

■ उत्साही बने, आलसी न बने, सुचरित धर्म का आचरण करें, धर्मचारी पुरुष इस लोक व परलोक में सुखपूर्वक सोता है.

■ राग के समान अग्नि नहीं, द्वेष के समान भल नहीं, स्कन्धों के समान दुख नहीं, शांति से बढ़कर सुख नहीं.

■ क्रोध को अक्रोध से जीतो, असाधु को भलाई से जीतो, कृपण को दान से जीते, झूठ बोलने वालों को सत्य से.

■ सच बोलो, क्रोध न करें, थोड़ा भी मांगने पर देवे, दुष्ट मित्रों का सेवन न करे

कहानी

काश! वह मुझे बरी कर देता

ओम प्रकाश अवस्थी, बहराइच, उत्तर प्रदेश

नाम-आशिक अली उर्फ छब्बन, उम्र-बारह साल, वल्दियत-स्व. जुम्मन, पेशा -पता नहीं, रंग-गेहुआ, कद-साढ़ें चार फिट, साकिन, ग्राम-मोहरनिया, नेपाल बार्डर, इण्डिया.

ये बायोडाटा उस मुजरिम का, जिसके सिर पर बैक के साथ धोखाधड़ी करने का इल्जाम था. तलाशी के दौरान उसके पास से एक अदद हनुमान जी की फोटो बरामद हुई. मुसलमान होकर भी उसके पास से एक हिन्दू देवता की फोटो का बरामद होना, इस बात का तस्दीक करने के लिए काफी था कि वह इतनी कम उम्र का होकर भी कितना बड़ ठग और शातिर दिमाग है. पुलिस ने उसके तार तस्कर या आतंकी संगठनों से भी जुड़े होने का शक जाहिर किया है. बताया जाता है कि कई साल पहले हुए मुम्बई धमाकों के आतंकी सरगना दाऊद इब्राहिम का तथाकथित रसोइया व उसका दायॉ हाथ माना जाने वाला इस्माइल, इसी मोहरनिया गॉव का था, और यहीं से गिरफ्तार किया गया था. पूरा गॉव गरीब व अशिक्षित मुसलमानों का है. हालांकि वहॉ एक मरदसा भी है जिसमें गॉव जवार के सारे मुसलमान बच्चे पढ़ते हैं. वे क्या पढ़ते है, ये खुदा जाने..

बहरहाल, मैल से चीकट व कई जगहों से फटी एक जाकेट पहने आशिक अली उर्फ छब्बन, फिलहाल पुलिस हिरासत में है. पुलिस ने उसे कल शाम उसके घर से ही गिरफ्तार कर लिया था. उसकी कमर से नीचे एक नेकर है जो हिप पर इस कदर फटी है कि उसे चीथड़े का दर्जा दिया जा सकता है, और जब पुलिस ने तफ्तीश के दौरान उसकी जाकेट उतरवाई तो वह कड़कती ठण्ड में भी पूरी तह नंगा पेट और नंगी पीठ पाया गया. तलाशी के दौरान उसकी उस फटी जाकेट की एक अदद साबुत जेब में हनुमान का वह छोटा सा फोटो कार्ड बरामद हुआ था.

कल देर रात तक तहकीकात चलती रही. मगर अपराधी जुल्म कुबूल करने से बराबर मुकरता रहा. पुलिस ने विवेचना में कोई शिथिलता नहीं बरती है. मुजरिम का पेट और पीठ, इस बात के चश्मदीद गवाह है. उन जगहों की चमड़ी सुर्ख होकर काली भी पड़ चुकी है, और कहीं-कहीं खाल उघड़ गयी है. वैसे, पुलिस ने दावा किया है कि वह शातिर अपराधी के जरिये, अपराध व आतंकवाद से जुड़ी कुछ बेहद महत्वपूर्ण जानकारीयों को हासिल करने में कामयाब हो जायेगी. बहरहाल, तफ्तीश अभी जारी है....

शेष अगले अंक में..

गीतिका

हमने अपने ही हाथों से सन्देहों की भीत खड़ी की,
मन के कोमल सम्वेदन से अवसादों की जीत बड़ी थी।
सदा अकेला रहा जूझता भीड़ भरे कोलाहल में भी
मिलन की घड़ियों की जिज्ञासा निर्वसना भयभीत खड़ी थी।
मंगल बेला जब भी आई निकल गई बस पास से होकर
असमंजस की विषम परिस्थिति अपने ही विपरीत लड़ी थी।
तोड़ के बन्धन जब भी चाहा दरवाजों के पार निकलना
सारे आगन की अगॅनाई सिसकी ले भय मीत जड़ी थी।
सद्भावन मनभावन पथ पर निश्चय के घटकों की दस्तक,
जब भी हमको पड़ी सूनाई शंका सम्मुख ढांट खड़ी थी
धुन्ध भरे कोहरें की चादर समय सुहावन के ऊपर से
जब भी चाहा खींच उतारे ऋत बसंत बन पीत खड़ी थी।
सूख गए ऑसू के कतरे मौन हो गई स्वर की सरगम
अन्तरतम तक जो छू जाए बातें कर जो मन भा जाए
उत्पीड़ित मानव के मन में दुविधाओं की शीत बड़ी थी।

पी.एस.भारती, बरेली, उ०प्र.

सब कुछ मिलेगा

बीती बातों को भूल जाना चाहिये
दोस्तों हर हाल में मुस्कुराना चाहिये।
पैदा न हो कभी मन में संशय कोई
जो दिल में हो खुलकर बताना चाहिये।।
दिन तो कटता है केवल भाग दौड़ में।
लेकिन रात को घर लौट आना चाहिये।।
कौन कहता है कि ईश्वर मिलता नहीं
उसे प्यार से बस अपना बनाना चाहिये।।
इस तन को कब तक सजाते रहोगे तुम।
अब प्रभु मूरत हृदय में बसाना चाहिये।।
मगन होकर सिर्फ भजन करो भगवान का।
गर्व भरा शीश चरणों में झुकाना चाहिये।।
सब कुछ तुम्हें भी मिल सकता है यादव
भक्ति भाव सहित प्रभु के गुण गाना चाहिये।।

रामचरण यादव 'याददाश्त;, बैतूल, म.प्र

व्यंग्य

चॉद पर साहित्यकार सम्मेलन

बलराम परमार 'हंसमुख',
इटारसी

चौकिए मत, खबर सत्य है. चॉद पर थूकने वालों के मुँह पर आजकल के साहित्यकार तमाचा जड़ने जा रहे है. इन साहित्यकारों की यह हसरत जल्द की पूरी करें, ऐसी मेरी भी दिली तमन्ना है. लेकिन यदि मेरी यह मुराद जीते जी पूरी होती है तो धरती के मजनुओं के लिए खतरे की घण्टी बज गई समझो? तब उन्हें अपनी लैलाओं के लिए कोई और चॉद सा खूबसूरत तोहफा तलाशना होगा. क्योंकि साहित्यकारों के सम्मेलन के बाद ध ारती के मजनू अपनी प्रेमिका के लिए चॉद-सितारा तोड़कर नहीं ला सकेंगें? क्योंकि सम्मेलन के बाद एक हिसाब से इस पर उनका एकाधिकार हो जाता है? नवोदित साहित्यिक संस्थाएं चन्द्रमा पर ही अपनी संस्था से जुड़ें नवोदित, अंकुरित, प्रस्फूटित शब्दकर्मियों का सम्मेलन आयोजित किया करेगी. चॉद पर सम्मेलन आयोजन करने की सनक का कारण जानने पर इस व्यंग्य शब्दकर्मी को पता चला है कि नवोदित साहित्यिक संस्थाओं का पौराणिक साहित्यक संस्थाओं से ताल-मेल नहीं बैठ रहा है. नवोदित विचार पोषित साहित्यिक संस्थाओं के सदस्यों का कहना है कि पौराणिक साहित्यिक संस्थाओं के मंच पर जो सॉपनाथ-नागनाथ कुण्डली जमाए बैठे है वे युगों-युगों से अपनी केचूली छोड़ ही नहीं रहे है. नतीजा चायनीज हायकु-फायकु आने तक भारतीय साहित्य जगत में उदारीकरण का भाव नहीं जन्मा है. अतः मजबूरी में एक अक्षर अथवा एक वाक्य का छद लिखने वाले चमचागिरी से ओतप्रोत तथा सुविध ाा सम्पन्न बड़े नामी गरामी पुरस्कारों से नवाजे गए नवोदित साहित्यकार चॉद पर ही अगला सम्मेलन आयोजित करने के लिए बड़े पैमाने पर एकत्रित हो रहे हैं.

प्रश्न है कि बिना छत वाले ये साहित्यकार विचार विमर्ष के लिए एकत्रित कहॉ होगें? स्वाभाविक है चौरोहे-तिराहे पर. प्रजातंत्र में यही तो एकमात्र स्था है मनकी भड़ास निकालने का? इस प्रयास में रत एक साहित्यकार से इस कलमकार ने यूँ ही पूछ लिया-'नवोदित प्रस्फूटित-अंकुरित भाइजान. साहित्यकारों का चॉद पर सम्मेलन वर्तमान सदी तो क्या अगली सदी भी भूतपूर्व हो जाएगी तब तक नहीं होगा.' कटु सवाल पर उनका मृदु जवाब था-'धन बल सब कुछ पाया.' मैं निरुत्तर हो गया. होना भी स्वाभाविक था. आजकल धन के बल सब कुछ पाया जा सकता है. हॉ सब कुछ. लेकिन एक व्यंग्यकार का मन संतुष्ट होने वाला कहॉ था? फिर प्रश्न किया-'चॉद पर ही क्यों, धरती के ही किसी अछूत टुकड़े पर ही सही?' उनका दूसरा अकाट्य तर्क सुनकर कुँवारी बेटी के बाप की तरह मेरी नींद उड़ गई. कहने लगे 'सदियों से चॉद साहित्यकारों, विशेषकर श्रृंगार प्रेमियों का प्रिय रहा है. मजनू-जूलियट भी उसी को तोड़ते रहे है. उपमाएँ भी यही होती रही है. अब इक्कीसवीं सदी में भी खाली रिश्ता पाला-ढोया जाए, हजम नहीं होता. इस बहीरंग रिश्ते को अंतरंग में बदलना ही नवोदित साहित्यकारों के महान मिशन का मर्म स्पर्शी पड़ाव है. इसे कोई कुछ भी कहे, बेलगाम कहें, पागलपन की हद तक कहें, हम तो चॉद पर ही नवोदित साहित्यकारों का सम्मेलन आहूत करेगे. हॅसमुख जी, तुम कितने भी व्यंग्यबाण चलाओ, हम चॉद पर सम्मेलन आयोजित करके ही दम लेगें और इस सौरमण्डल की दुनियॉ तो क्या अज्ञात सौरमण्डल की दुनिया को भी बता देगे कि साहित्यकार भी किसी नेताओं से कम नही हैं.'

चॉद पर ही सम्मेलन आयोजित करने की ठान चुके नवोदित साहित्यकार

ग़ज़ल

फैंले हैं अँधेरों के हामी, वादी में उजाला कौन करें।
बन्दूक हैं जिनके हाथो में, उनसे समझौत कौन करे?
हालात के बिगड़े चेहरे पर, कुदरत की नज़र तो पड़ने दो।
हो जाएगा सब कुछ पहले-सा पर इसका चर्चा कौन करें?
सब चाहते हैं आसानी से मिल जांए ज़माने की खुषियां।
रिश्वत का चलन जब आम हुआ मेहनत पे भरोसा कौन करें?
तफ़रीक़ मिटे, ना पैद हो गम हर सम्त सजे बस्ती अपनी।
पर सोच रहीं हूँ मैं पैहम, ये काम अनोखा कौन करें?
वो सच का दावेदार बड़ा हर कोई उसके साथ मगर।
इस झूठ के जंगल में आख़िर उसका क़द ऊंचा कौन करें?
सर सब्ज़ बदन पर हमले से हर ओर मची हैं चीख-पुकार।
ये कहने वाला कोई नहीं बस्ती में ऐसा कौन करें?
जब 'राज' मुक़द्दर में सहरा, सहरा की गर्म हवांए है
मिल जांए धनेरी छांव मुझे फिर ऐसी तमन्ना कौन करें?

डॉ. राजकुमारी शर्मा 'राज', गाजियाबाद, उ०प्र०

अपनी भड़ास निकालते हुए आगे बड़बड़ाने लगे-'हँसमुख जी, इन पौराणिक साहित्यिक संस्थाओं के पण्डों ने नवोदित काव्य धारा के धनियों को इस धरती पर पॉव पसारने की जगह न दी तो क्या हुआ? हम चॉद पर अपना घोसला बनाएंगे, चॉदनी में नहायेंगे और चॉद की कसम खा खाकर रचना करेंगें. वहॉ जो रचना हममें और हमसे फूटेगी, प्रस्फूटित होगी उसकी न ो कोई जड़ होगी और न जोड़? उसके तोड़ का तो प्रश्न ही नहीं उठता? यहॉ तक कि सेक्सपीयर का रिकार्ड चकनाचूर हो जाएगा? पौराणिक कवियों की कविताएँ आपस में जंग छेड़ेगी? मीडिया से जन्मी नई नवेली लेखिकाओं के उपन्यास तिलमिला जाएंगे. मिल्टन और सूरदास भी गंभीर सोच में डूब जाएंगें. पौराणिक साहित्यकार जो राजधानी में जमींदारों की तरह कुण्डली मार कर बैठे है उनके पॉव तले की जमीन खिसकने लगेगी?'

मैंने साधु संत की मुद्रा में समझाने की कोशिश की, कि चॉद पर सम्मेलन करकने की बात फिल्मी अथवा व्यापार जगत के लोग करे तो बात जमती है? साहित्यकार और वह भी आजकल का. इतना बड़ा बीड़ा उठाए समझ के परे हैं. मेरा इतना भर कहना था कि बाप रे बाप,...सब के सब गीदड़ से शेर हो गए और मेरे चारों ओर दहाड़ने लगे. तब मेरी बंद अकल का ताला खुला और याद आया-अरे ये तो वो साहित्यकार है, जिनमें ताकत तोप बम से ज्यादा है. दुनियॉ चॉद पर बस्ती बनाए न बनाए, साहित्यकार सम्मेलन होगा, पक्का इरादा है.

मानव प्रार्थना

'मनुर भव' ऋगवेद ऋचा स्तुति वाचन से
आदमी बनने का सु मार्ग दिखलाइए।
'सुमना भव' यजुर्वेद मंत्रों के भजन से
मानसिक प्रदूषण को विश्व से भगाइए।
'सरस्वन्तम हवामहे' सामवेद गाएं साथ
पृथकतावादियों को एकता सिखाइए।
'मानवों मानवमू पातु' अथर्तवेद संहिता
मानव मानव पाले प्रेरणा जगाइए।

विश्व कवि संसद

पृथ्वी ग्रह के मानवों का धर्म है मानवता
वैज्ञानिक सत्य एक सभी अपनाइए।
मानव प्राणों का मूल्य धर्म पंथो से अधिक
सर्व धर्म सम भाव स्नेह समझाइए।
विश्व संविधान में समता एकता नियम
विश्व सरकार दिव्य भूमिका बनाइए।
सद साहित्य से सम्भव विश्व में परिवर्तन
विश्व कवि संसद के कबि बन जाइए।

डॉ० कृष्ण नारायण पाण्डेय,
संयुक्त निदेशक, आकाशवाणी, नई दिल्ली

गीत

कैसे सज़ती सेज विरह की, कैसे करती रुदन यामिनी!
यदि पूनम ने कभी अमा को हंसकर नहीं निहारा होता!
कैसे सुस्मृतियों के दीपक,
कभी विरह के घर जल पाते?
फिर कैसे 'घनश्याम' युगों तक,
राधाओं के संग पल पाते?
कैसे प्यास मिलन की बढ़ती,
क्यों कर रटता पिया पपीहा?
फिर 'घनश्याम' किसीग्वालिनको,
पनघट पर कैसे छल पाते?
कैसे निज अस्तित्व भुलाकर मीरा बनतीं मीराबाई?
यदि न प्रेम से विष प्याला पी अपने कंठ उतारा होता!
कैसे फूल बिहँसते वन में,
हँसती कैसे कली दुबारा?
कैसे करते भ्रमर नयन से,
कलि-कुसुमों को स्निग्ध इशारा?
कैसे पुनः सुहागन बनती,
लतिकाएं सज पीत-वसन से?
कैसे युगों-युगों तक धरती,
करती अपना रुप निखारा?
कैसे उपवन के अधरों पर लाली ॲज पाती दोबारा?
यदि मधुमृत का घर पतक्षर ने आकर नहीं बुहारा होता!
अपना दर्द जता कर जग को,
की मैंने भारी नादानी!
मेरे ऑसू देख रुकी, कब;
सरिताओं की गति तुफानी।
मेरी पीर मनोगत करके,
कब नभ ने दो अश्रु गिराये!
मेरे आहत स्वर से तापित,
कब पिघला पाषाण हिमानी!
श्रद्धा सुमन चढ़ाता होता आज विश्व का कण-कण मुझको;
यदि मैंने गीतों में अपने जग का दर्द उभारा होता!

ब्रज बिहारी 'ब्रजेश', मोहम्मदी खीरी, उ०प्र०

मानद उपाधि संबंधी प्रस्ताव आमंत्रित है

साहित्य जगत में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित व अर्न्तराष्ट्रीय जगत में भी चर्चा की ओर अग्रसित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष से निम्न मानद उपाधियॉ भी प्रस्तावित है-

०१ हिन्दी रत्न- हिंदी भाषा के उत्थान हेतू किये गये कार्यो के आधार पर किसी अहिन्दी भाषी भारतीय/विदेशी को दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान होगा. ११०००रुपये, मानद उपाधि, व स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

०२ हिन्दी भाषा रत्न-हिंदी भाषी/अहिन्दी भाषी साहित्यकार जो हिंदी साहित्य की सेवा किसी भी विधा में कर रहा हो. हिंदी की किन्हीं दो विधाओं की दो पुस्तकें अथवा हस्तलिखित पाण्डुलिपि (खण्ड काव्य/उपन्यास/कहॅानी संग्रह/संस्मरण/शोध ग्रंन्थ/ आलेख) कम से कम १०० पृष्ठ की होनी अनिवार्य है. यह हिंदी साहित्य के दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान होगा. इसमें ११०००/-रुपये, मानद उपाधि, व स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

०३ हिन्दी गौरव-हिंदी भाषा के विकास हेतू किये गये कार्यो के आधार पर किसी अहिन्दी भाषी भारतीय/विदेशी को दी जाने वाली दूसरी उपाधि होगी. इसमें ५१००/-रुपये, मानद उपाधि, व स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

०४ हिन्दी भाषा गौरव-हिंदी भाषी/अहिन्दी भाषी साहित्यकार जो हिंदी साहित्य की सेवा किसी भी विधा में कर रहा हो. हिंदी की किन्हीं दो विधाओं की दो पुस्तकें अथवा हस्तलिखित पाण्डुलिपि (खण्ड काव्य/उपन्यास/कहॅानी संग्रह/संस्मरण/शोध ग्रंन्थ/ आलेख) कम से कम ५० पृष्ठ की होनी अनिवार्य है. यह हिंदी साहित्य के लिए दी जाने वाली दूसरी उपाधि होगी. इसमें ५१००/-रुपये, मानद उपाधि, व स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

०५ हिन्दी श्री- हिंदी भाषा के विकास हेतू किये गये कार्यो के आधार पर किसी अहिन्दी भाषी भारतीय/विदेशी को दी जाने वाली तीसरी उपाधि होगी. इसमें २५००/-रुपये, मानद उपाधि, व स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

०६ हिन्दी भाषा श्री-हिंदी भाषी/अहिन्दी भाषी साहित्यकार जो हिंदी साहित्य की सेवा किसी भी विधा में कर रहा हो. हिंदी की किसी १ विधा की १ पुस्तक अथवा हस्तलिखित पाण्डुलिपि (खण्ड काव्य/उपन्यास/कहॅानी संग्रह/संस्मरण/ शोध ग्रंन्थ/ आलेख) कम से कम ५० पृष्ठ की होनी अनिवार्य है. यह हिंदी साहित्य के लिए दी जाने वाली तीसरी उपाधि होगी. इसमें २५००/-रुपये, मानद उपाधि, व स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

विशेषः १.यह आवश्यक नहीं है कि यह उपाधियां प्रत्येक वर्ष दी ही जाए. प्राप्त प्रविष्ट्रियों का मूल्यांकन कर प्रत्येक एक वर्ष में एक ही प्रदान की जाएगी. मानद उपाधियों के लिए ११००/-रुपये का पंजीकरण शुल्क देना अनिवार्य होगा. इसे **युनियन बैक** की किसी शाखा में चेक के माध्यम से **'सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्या 538702010009259** में जमा कर अथवा डी.डी./धनादेश के माध्यम से भी भेज सकते हैं. चेक या नगद खाता में जमा करने के सदंर्भ में आपको जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ सलंग्न करनी अनिवार्य होगी.उपाधि नहीं मिलने पर यह पैसा राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की आजीवन सदस्यता के रुप में स्वीकार्य कर लिया जाएगा. जो आवेदक पहले से ही आजीवन सदस्य है उन्हें विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की आजीवन सदस्यता प्रदान कर दी जाएगी. अगर आवेदक दोनों का आजीवन सदस्य पूर्व में ही है तो यह पैसा स्नेहाश्रम के मद में जमा कर आपको ११००/रुपये मूल्य की पुस्तकें उपहार स्वरुप भेंट की जाएगी. प्राप्त पुस्तकें पाण्डुलिपियां किसी भी दशा में लौटाई नहीं जाएगी. संस्थान को इनका भविष्य में प्रकाशन कराने का पूर्ण अधिकार सुरक्षित रखेगा. अगर प्राप्त पाण्डुलिपियां पुस्तक रुप में छपती है तो आपको इसकी १०प्रतियां व विक्री होने की दशा में १५प्रतिशत राशि लेखक को प्रदान की जाएगी. निर्णायंक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. विवाद के संदर्भ में न्यायायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा.आपकी प्रविष्ट्रियां लगातार पॉच वर्ष तक निर्णायक मंडल के समक्ष रक्खी जाएगी. पॉचवे वर्ष भी चयन नहीं होने के सदंर्भ में ही नियम ४ का अनुसरण किया जाएगा.आवेदन के साथ मांगी गयी पुस्तक/पाण्डुलिपी की एक प्रति, सचित्र जीवन परिचय की एक प्रति, दो टिकट लगे पता लिखा लिफाफा भेजना अनिवार्य होगा.चयनित होने पर उपाधियां डाक से प्रेषित नहीं की जाएगी. (विकलांग/अस्वस्थ होने पर आपके किसी प्रतिनिधि को, जिसके बारे में पूर्व सूचना कार्यालय को होगी को ही प्रदान की जाएगी.) **प्रस्ताव भेजने की अंतिम तिथिः १५ नवम्बर २००६**

सचिव

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,

इलाहाबाद–211011 ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

मानद उपाधि हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः............................मानद उपाधि।

संदर्भः

महोदय,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले ....मानद उपाधि हेतु मैं अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ. मेरा विवरण निम्नवत है-

नाम :..

पिता/पति का नाम :..

पता :..

....

दूरभाषा सं.:.........................मो०:..........................ईमेलः..............................

शैक्षणिक योग्यताः (विस्तृत विवरण)

....

....

....

पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः ....

प्रेषित प्रतियाः...............................विधाः......................................वर्षः...........

अन्य साहित्यिक विवरणः ....

....

धनादेश/बैक ड्राफ्ट/डी.डी.का विवरणः राशि.................... बैंक का नामः................ बैक ड्राफ्ट/डी.डी. /धनादेश/जमा पर्ची का विवरणः..

मै शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूॅ कि

१. प्रेषित पुस्तक/पाण्डुलिपी मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होउंगा.
२. मैंने संस्थान के पुरस्कार संबंधी नियम पढ़ लिए है और मैं उन्हें मान्य करता/करती हुॅ.

भवदीय

सलंग्नकः	हस्ताक्षरः
१. सचित्र जीवन परिचय- एक प्रति	पूरा नामः..................................
२. टिकट लगा पता लगा लिफाफा-दो	पताः.......................................
३. संबंधित पुस्तक/पाण्डुलिपीः प्रत्येक एक	....
४. धनादेश/बैक जमा पर्ची की छाया प्रति	दिनांकः....................................

व्यक्तित्व

आकाशवाणी में विभिन्न प्रतिष्ठित पदों पर काम करते हुए अंत में वरिष्ठ केन्द्र निदेशक के पद से सेवानिवृत्त श्री एच.वी.रामचन्द्र राव की मातृभाषा कन्नड़ है. इन्होंने राष्ट्रीय एकीकरण की भावना तथा भाषिक सद्‌भाव से प्रेरित होकर हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रारम्भिक स्तर की कई पुस्तकों की रचना की है. सरल हिन्दी रचना-कन्नड़ माध्यम भाग-१, २. सरल हिन्दी रचना-अंग्रेजी माध्यम, शिक्षा प्रद कहॅानियॉ भाग-२, काव्य कलश-सम्पादित, श्री रामचरित मानस सुन्दर काण्ड.

भाषिक समरसता स्थापित करने के उद्‌देश्य से श्री राव ने अनुवाद कार्य पर अधिक बल दिया है. कन्नड़ से हिन्दी तथा हिन्दी से कन्नड़ में इन्होंने कई कृतियों का अनुवाद किया है. आपके द्वारा कन्नड़ से हिन्दी में अनूदित कबीर की ८०६ साखियों (कबीर वचनावली में संग्रहीत) का कन्नड़ में काव्यानुवाद, श्री रामचरित मानस पर ३०० पृष्ठों का 'ओंदु रसयात्रे' नामक रसात्मक आलोचना ग्रंथ, प्रेमचंद की चुनिंदा कहानियों का 'सत्याग्रह मत्तु इतर कथेयलु' नाम से कन्नड़ में अनुवाद. यशपाल-एक जीवनी (साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित) तथा श्री रामचरित मानस का कन्नड़ में गद्यानुवाद. इसी प्रकार ४२० पृष्ठों के कन्नड़ उपन्यास का 'ग्रामायण' नाम से तथा प्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यासकार देवुडु के उपन्यास का 'महाब्राहमण' नाम से हिन्दी में अनुवाद किया है. अपने आकाशवाणी के कार्यकाल में श्री राव ने न केवल हिन्दी रचनाओं का आकाशवाणी से प्रसारण करवाया बल्कि स्वयं लेखक की भूमिका का निर्वाह करते हुए अन्य भाषाओं के नाटकों का हिन्दी में रूपान्तरण करके रेडियो नाटक के रूप में प्रस्तुत किया. हिन्दी में रूपांतरित आपके प्रमुख नाटक हैं- सालवती प्रसाद की कथा का रेडियो रूपांतर-बम्बई केन्द्र से हिन्दी में प्रसारित तथा बेंगलूर और धारवाड़ केन्दों से कन्नड़ में प्रसारित, 'कली कलमी हृदय की', एन.के.के. कन्नड़ नाटक का हिन्दी अनुवाद, अखिल भारतीय राष्ट्रीय नाटकों की माला में दिल्ली और अन्य हिन्दी केन्द्रों से प्रसारित, कन्नड़ के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री एस.एल.भरैप्पा के उपन्यास का 'निराकरण' नाम से हिन्दी धारावाहिक नाटक रूपांतर विविध भारती के २१ केन्द्रों से एक साथ १३ किस्तों में दो बार प्रसारित, कबीर के भजनों के कन्नड़ अनुवाद पर आधारित 'गीत रुपक' बेंगलूर केन्द्र से प्रसारित आदि. आपने कन्नड़ और हिन्दी में कई रुपक और शब्द चित्र प्रसारित करवायें है. हिन्दी के प्रचार-प्रसार, लेखन, अनुवादन तथा आकाशवाणी से प्रसारण में इनके महनीय योगदान का संज्ञान अनेक सरकारी/गैर सरकारी संस्थाओं/समितियों ने लिया और इन्हें पुरस्कृत/सम्मानित किया.

इनकी अनूदित कृति 'ग्रामायण' केन्द्र सरकार द्वारा पुरस्कृत हिन्दीतर भाषी हिन्दी साहित्यकारों का पुरस्कार १९७७-७९, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेंगलूर, सम्मान पत्र १९८७, कोलार जिला कन्नड़ साहित्य परिषद सम्मान पत्र १९९५, कर्नाटक हिन्दी प्रसार समिति, जयनगर बेगलूर, हीरक जयंती परम विशिष्ट सम्मान पत्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग-२००५, हिन्दी मार्तण्ड मानद उपाधि प्रमाण पत्र. द्वितीय हिन्दी भाषा कुंभ २००६, सम्मान पत्र २००६, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद, बेगलूर, कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति, बेगलूर, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेगलूर तथा भारतीय भाषा संगम, बेगलूर के संयुक्त तत्वावधान में समर्पित प्रशस्ती-पत्र २००२ शब्द साहित्य सम्मान-२००८ आदि.

हिन्दी तथा कन्नड़ भाषा के बीच साहित्यिक विनिमय, सौहार्द और समन्वय को सम्पुष्ट करने वाले सुधी साहित्याकर श्री एच.वी. रामचन्द्र राव को सौहार्द सम्मान, से समलंकृत कर एक लाख एक हजार रुपये भेंट स्वरुप प्रदान करते हुए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान हर्षित एवं गर्वित है.

स्नेह बाल मंच

कर्म ही जीवन है

✍अनीता पंडा, मेघालय

एक बार एक गॉव में भयंकर अकाल पड़ा. कई वर्षो से लगातार बारिश न होने के कारण जमीन लगभग सूख गयी थी. कई वर्षो से लगातार बारिश न होने के कारण जमीन सूख गयी थी. सारे गॉव वाले परेशान थे. उस गॉव में मनोहर नाम का किसान रहता था. अपने परिवार का पेट भरने के लिए घर में जो कुछ था, उसे धीरे-धरे बेच दिया. कुछ दिन तक तो घर का खर्च चला पर फिर ढाक के वही तीन पात. थक-हार कर वह घर बैठ गया. रात-दिन उसे अपने परिवार की चिन्ता होती.

कई दिनां तक घर में खाली बैठे-बैठे उसके मन में विचार आया कि क्यों न गॉव से बाहर जाकर कुछ काम ढूँढा जाये. बस उसने कुछ जरुरी समान बॉधा और चल पड़ा. चलते-चलते वह बहुत थक गया. धूप बहुत तेज थी. पैरों तले धरती जल रही थी. प्यास के मारे वह बेहाल हो गया था. पानी की खोज में उसने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई पर उसे दूर-दूर तक पानी का नामोनिशान नहीं दिखायी दिया. आवाज का पीछा करते हुए वह तेजी से उस ओर बढ़ने लगा. काफी दूर चलने पर उसे झरना दिखाई दिया.

झरने के पास पहुँचकर उसने शीतल जल में अपना हाथ-पॉव धोया और अपनी प्यास बुझाई. उसकी सारी थकान दूर हो गई. वह झरने के किनारे बहुत देर तक बैठा रहा. वह स्वयं नहीं जानता था कि उसे काम की तलाश में कितना और चलना पड़ेगा? उसे कहॉ काम मिलेगा? लगातार बहते झरने को देखकर उससे नहीं रहा गया. उसने पूछा, 'ओ मेरे प्यारे झरने! मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ. क्या पूछूँ? झरने ने उत्तर दिया, 'हे मुसाफिर, तुम जो चाहों पूछ सकते हो.' मनोहर ने पूछा, 'हे झरने! तुम लगातार बहते रहने हो. तुम थकते नहीं हो? झरने ने कहा, 'जानते हो मुसाफिर, अगर मैं लगातार नहीं बहूँगा, तो मेरा पानी सड़ जाएगा. जानते हो, मेरा काम है बहना. इसी तरह जब तक सॉस चलती है,तब तक जिन्दगी चलती है. जिन्दगी तब रुक जाती है, जब इन्सान की मौत आती है.' मनोहर ने कहा-'ध ान्यबाद, मेरे प्यारे झरने! मुझे समझ में आ गया कि तुम मुझे क्या समझाना चाहते हो? अब मैं जिन्दगी से हार नहीं मानूँगा.' ऐसा कहकर मनोहर अपनी राह चल पड़ा.

लगातार चलता हुआ वह एक गॉव में पहुँचा. वहॉ की जमीन भी सूख गयी थी. पूछने पर मालूम हुआ कि उस इलाके में भी कई वर्षो से बारिश नहीं हुई थी. धरती पर बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गयी थी. नदी और तालाब सूख गए थे, पर एक किसान को हल चलाते देख उसे बहुत आश्चर्य हुआ. वह बड़ी मेहनत से हल चला रहा था. मनोहर आराम करने के लिए पेड़ के नीचे बैठ गया. देखते-देखते दोपहर से शाम होने को आयी किसान अपने काम में मगन था. वह मन ही मन सोच रहा था कि किसान कितना मूर्ख है, जो सूखी धरती पर हल चला रहा है. इसमें तो कोई फसल उगेगी नहीं. हल लेकर खेत से लौटते हुए किसान ने मनोहर को पेड़ के नीचे बैठे देखा. उसने पूछा, 'ओ मुसाफिर, तुम कौन हो और कहॉ से आए हो?' मनोहर ने कहा, 'मैं यहॉ से दूर सूरजपुर गॉव से काम की तलाश में आया हूँ. उसने कहा, अगर तुम काम की तलाश में आए हो, तो तुम्हें बता दूॅ कि इस गॉव की हालत भी अच्छी नहीं है. यहॉ भी सूख पड़ा है.' पर तुम इस सूखी धरती पर हल क्यों चला रहे हो?' मनोहर ने पूछा. यह सूनकर किसान मुस्कराया और बोला, 'मुझे मालूम है कि पानी की कमी से धरती सूख गयी है, पर मैं अपना काम करता रहता हूँ.' मनोहर ने उत्सुकता से पूछा, 'इससे तुम्हें क्या फायदा होगा?' किसान ने कहा, 'इससे क्या फायदा यह तो मैं नहीं जानता. बस इतना जानता हूँ कि हर व्यक्ति अगर अपना-अपना काम करें, तो ईश्वर भी अपना काम करने के लिए मजबूर हो जाएगा.' यह सुनकर मनोहर को हॅसी आ गयी.वह व्यंग्य से बोला, 'अच्छा देखते है.' कहकर वह चल पड़ा. अभी वह कुछ ही दूर गया था कि उसने देखा कि अचानक आकाश पर काले बादल छा गए. देखते-देखते ही चारों ओर गहरा अन्धकार छा गया और जोर-जोर से बारिश होने लगी, जिसने मनोहर को पूरी तरह भिगो दिया. काम की तलाश में निकला मनोहर अपने गॉव की ओर चल पड़ा.

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को इस अंक में अनीता पंडा चाची की कहॉनी कर्म ही जीवन है पढने को दे रही हूँ. वास्तव में कर्म का जीवन में बहुत महत्व है. गीता में कृष्ण ने भी कहा-कर्म ही जीवन है.

आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

कविताएं

प्रेम

शब्द प्रेम/ अनेक अर्थ
क्यों होता है?/किसने किया
क्यों किया?/प्रेम की अनुभूति
प्रेम का अनुभव/प्रेम का स्पन्दन
प्रेम का मर्म/कितनी हत्या
असख्य बलात्कार/दो दिलों में खलल
कई घर बरबाद/कई घर आबाद
प्रेम का रहस्य/है बरकरार

संजय श्रीवास्तव, राजनांदगांव, छ.ग.

नियम

प्रकृति का नियम है
छोटे जानवर को बड़ा खाता है
क्या मानव भी
इसी श्रेणी में आता है

डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर,मप्र.

हिन्दी का अपमान मत करो

बच्चा पैदा होते ही
अंग्रेजी भाषा सीख रहा है
वन-टू-थ्री बोल रहा है।।
यज्ञोपवीत का नाम न जाने,
नेक टाई को धार रहा है।
नमस्ते करना भूल गया है
बाय टाटा हिला रहा है।।
विदेशी भाषा से पहले
मातृभाषा का ज्ञान करो।
हिन्दी राष्ट्र की भाषा है,
हिन्दी का मत अपमान करो,
माता पिता से अनुरोध है कि
अंग्रेजी से पहले बच्चे को
हिन्दी भाषा सिखाओं।

देवराज आर्यमित्र, हरिनगर, नई दिल्ली

मैं हूँ इंसान

तड़के भोर में एक कुत्ता जगा
जगते ही वह आदमी की
भाषा बोलने लगा
जाति, धर्म, सम्प्रदाय की
देने लगा दुहाई।
लम्बी-चौड़ी बातें और
खूबसूरत किले हवाई।
चुनाव की करने लगा चर्चा।
कोरे आश्वासनों का
बॉटने लगा पर्चा
सुनाने लगा
अपहरण, मर्डर व दंगे का किस्सा।
परिवार बॉटने के लिए
मॉगने लगा अपना हिस्सा
अधिकारी की तरह अकड़ा,
एक दो को जो पकड़ा।
चलने लगा, दायें-बायें।
कुत्ते के परिजनों ने उसे घेरा,
फिर पूछा-
'बोला--बोल किसने तेरा दिमाग फेरा?
कहॉ की भाषा सीख आया है?
हमने तो तुम्हें ऐसा
कुछ भी नहीं सिखाया है।'
कुत्ता झूमते हुए बड़बड़ाया,
कुछ होश आया।
बोला-
'मेरे भैया! मेरे ताऊ!
अब मैं क्या बताऊँ!
कल मुझे एक आदमी ने
काट खाया था।
अब उसका जहर चढ़ गया है
मेरे दिल-दिमाग और
नस-नस में बस गया है।
पर खबरदार,
अब रखना ध्यान
मुझे मत कहना अब कुत्ता या श्वान
मैं हो गया महान,
मैं हूँ इंसान।
हॉ....मैं हूँ इंसान

अखिलेश निगम, लखनऊ

समर्पण

प्रेम में
नारी ज्यादा लिप्त है
पुरुष से,
न पाना, न कहना
कुछ किसी से।
बस! समर्पण कर
समर्पण पाना ही ध्येय है
क्योंकि, सुंदर, कोमल,
लावण्य भी है।

रितेन्द्र अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान

इन्सान

व्यथा और संताप/से विवश
असफलता की/निराशा में
भटक रहा/इन्सान
वर्तमान की/योजनाओं में
भविष्य के/आतंक से घिरा
जिन्दगी की/उलझन में
मार्ग बनाता/थक चुका है
इन्सान/लपटों से घिरे
शहर में/तेजाबी सभ्यता
के आवरण में/व्यक्तित्वहीन
होता जा रहा/इन्सान

अरुण कुमार शर्मा, मण्डी, हि.प्र.

रचकारों से विशेष आग्रह

अपनी काव्य रचनाएं भेजते समय इस बात का विशेष ध्यान रक्खें कि वे क्या लिखे है. उनके द्वारा लिखी गयी रचनाएं गीत, ग़ज़ल, दोहा, छन्द आदि की शीर्षक पड़ी होती है लेकिन उनका उस विधा से दूर-दूर का वास्ता नहीं होता. कृपया हिन्दी साहित्य को बदनाम न करें. कोई त्रुटि होना अलग बात है लेकिन बिना सिर पैर के होना, या उस विधा से वास्ता हीं नहीं होना अशोभनीय है. हम रचनाओं को कमियों के बावजूद छापते है वह इसलिए कि नये रचनाकारों को भी प्रोत्साहन मिलें. इसलिए नहीं की कुछ भी लिखकर भेज दें. एक बार में एक या दो रचनाएं ही भेजें. दो से अधिक रचनाएं विनष्ट कर दी जाएगी.

संपादक

कहानी

छिद्र से झांकती रोशनी

सुखवर्ष कंवर'तन्हा', दिल्ली

जब रेवा की शादी हुई थी तो वह बहुत खुश थी कि उसे पढ़ा लिखा पति और घर भी अच्छा मिला है. रेवा स्वयं भी अच्छी पढ़ी-लिखी और बहुत सुन्दर थी. उसकी चाहत के अनुसार ही सब कुछ था ऐसा लगता था जैसे उसकी झोली फूलों से भर गई है वह एक नए घर में चहक उठी थी. परन्तु कुछ समय बीतने के पश्चात् रेवा को ऐसा लगा जैसे उसके जीवन में ठहराव सा आ गया है. धीरे-धीरे उसके उन्मुक्त वातावरण पर बंदिशों का पहरा बढ़ने लगा था. वह बचपन से ही उन्मुक्त वातावरण में पली-बड़ी थी, माता-पित से उसे पूरी आजादी दे रखी थी लेकिन कई बातो पर लगाम अपने हाथों में भीा रखी थी. इसलिए घर का माहौल बिगड़ा हुआ नहीं था. शान्त और उन्मुक्त था. रेवा को ससुराल में धीरे-धीरे परदे में रखा जाने लगा था. सुबह-सुबह सूरज की पहली किरण भी उसे नसीब नहीं होती थी.

जैसे ही सुबह उठकर वह अपने कमरे की खिड़की का पर्दा खिसकाने लगती, न जाने किधर से उसकी सासू मां आ जाती और कहती, 'बेटी यह क्या कर रही हो? यहां आसपास के लोग ठीक नहीं, उनकी नीयत ठीक नही हैं इसलिए पर्दो को गिरा ही रहने दो. यदि तुम्हें ठंडी हवा ही चाहिए तो तुम अपनी नन्द श्यामा के साथ जा सकती हो या हमारे साथ.'

रेवा थोड़ी देर के लिए रुक जाती लेकिन उसे तो ठंडी हवा के झोंके और सूरज की पहली किरण बहुत ही अच्छी लगती, दोनों चीजों से ही उसे दूर रखा जाता था. शाम को यदि वह अपने पति से पूछती तो वह बड़े प्यार से उसके गालों को थपथपाकर कहता, 'मेरी प्रिय को किसी की नजर न लग जाए, इसीलिए मॉ तुम्हें लोगों की नजर से छुपा कर रखती है. तुम जहां चाहों मां के साथ या मेरे साथ घूमने जा सकती हो. चलों तुम्हें घुमानें ले चलूं. पर जब वह अपने पति के साथ घूमने जाती तो गाड़ी के खिड़कियों दरवाजे पूरी तरह सब बंद होते. उसे मायके भी बहुत कम जाने दिया जाता. एक बात उसे समझ नहीं आती थी कि घर में हर सुख सुविधा थी. खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी. उस पर पहरा क्यों था यह बात उसकी समझ से परे थी. क्या उसकी खूबसूरती उसकी दुश्मन थी या उसकी सुरीली आवाज उसके लिए घातक बन गई थी. फिर जब भी वह अपनी सास व नन्द के साथ बाहर जाती तो दोनों उसे पूरी तरह घेरे रहती, न किसी से आगे बढ़कर बात करने देती, न ही किसी के साथ उठने-बैठने देती. अब तो रेवा को अपने ससुराल वालों पर शक होने लगा था कि आखिर ये लोग उससे चाहते क्या है. क्या कोई राज है जो उससे छुपाया जा रहा है या और चक्कर है.' अब रेवा के दिमाग में भी अपने ससुराल वालों के व्यवहार पर आश्चर्य और संशय होने लगा.

> रेवा पढ़ी-लिखी और सुन्दर थी. उसकी चाहत के अनुसार ही सब कुछ था.
> 'देखो बहू यदि तुम्हें जब भी कुछ चाहिए तो तुम मुझे बता देना मैं दुकानदार को घर बुलवा लूंगी.
> 'तुम घर से बाहर जाकर पढ़ाई नहीं करोगी, लोग क्या कहेंगे'
> 'ऐसी बढ़िया आवाज और ऐसे लेखन को आपने दबा कर अच्छा नहीं किया.

एक दिन उसकी नन्द श्यामा को कुछ लोग देखने के लिए आए. सुबह-सुबह रेवा को उसकी सांस ने कहा, 'श्यामा को कुछ लोग देखने आ रहे है तुम्हें उनके सामने अधिक नहीं जाना. नहीं तो श्यामा खुल कर उनसे बात नहीं कर सकेगी. तब वो रेवा को आश्चर्य की सीमा नहीं रही जब उसे उनके साथ उठने बैठने के लिए मना कर दिया तो वह तड़प उठी, पर किससे कहे. खैर श्यामा का रिश्ता तय हो गया. शादी की तैयारियां भी होने लगी. उसके ससुराल वाले बाजार न जाकर दुकान वाले को ही अपनी कोठी पर बुला लेते थे और वहीं पर खरीददारी कर दहेज का सामान जुटाने लगे. कभी-कभी श्यामा और कृष्णा दोनों भाई-बहन बाजार जाते लेकिन रेवा को कभी भी साथ चलने के लिए नहीं कहते. शायद यह उनकी रिवायत होगी कि दुकानदार को घर पर ही बुलाकर सारी खरीददारी करने लगे.

रेवा की सास ने कहा, 'देखो बहू यदि तुम्हें जब भी कुछ चाहिए तो तुम मुझे बता देना मैं दुकानदार को घर बुलवा लूंगी, तुम अपनी पसन्द का ले लेना. रेवा चाहती थी कि वह कितना उठा कर लाएगा. यदि वह बाजार जाकर स्वयं ले लेगी तो और बात है.' वह घर में लड़ाई नहीं करना चाहती थी क्योंकि उसे घर में सारी-सुविधाएँ थी, केवल बाहर जाने की मनाही थी, शायद उसमें भी कुछ बात हो.

ठीक है रेवा को वह बाहर बहुम कम ले जाते थे लेकिन कभी भी उसे किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी. महीने में एक बार साड़ी सूट वाला और दो महीने में एक बार जेवरात वाला घर आकर रेवा की मर्जी पूछ कर जाते और उसके अनुसार उसे नए-नए कपड़े और नए-नए गहने घर बैठे ही मिल जाते.

एक दिन रेवा ने अपने मायके में अपनी दशा के बारे में अपनी मां को बताया. मां ने कहा, ‘बेटा यह बात तुम्हारी सास भी मुझे बता चुकी है क्योंकि उन्हें डर है कि कहीं तू बाहर आने-जाने लगे तो कुछ मनचले बदमाश तुम्हारे पीछे न पड़ जाए. वैसे और कोई बात नहीं है बेटा, धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा.’

यह कह कर रेवा की मां ने तो उसे समझाने की कोशिश की लेकिन यह बात सुन कर वह और भी चिन्तित हो गई कि क्या इन लोगों को मुझ पर विश्वास नहीं या कि कुछ और बात है. अपनी बहू को घर तक सीमित रखने के कारण आस-पड़ोस में भी खुसुर-पुसुर होती थी जिसकी रेवा की सास ने कभी भी परवार नहीं की क्योंकि वह रेवा को अपनी बेटी की तरह चाहती थी. क्योंकि जमाना बहुत खराब है और वह सुन्दर है इसलिए उसे लोगों को नजरों से बचाने के लिए पर्दे के पीछे रखती है और रेवा भी धीरे-धीरे इस बात को समझ जाएगी.

श्यामा का विवाह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ. घर पहले से अधिक शान्त हो गया. घर में सास और बहू के अलावा कोई नहीं होता था. रेवा के विवाह के दो वर्ष बीत चुके थे. एक दिन वह अपनी पुरानी किताबें देख रही थी तो उसमें से उसे अपनी एक पुरानी डायरी नजर आ गई जिसमें उसे अपने पुराने लिखे गीत, कविता और ग़ज़ले मिली. उसे याद आया कि कॉलेज के समय में वह उन रचनाओं को कहां से कहां तक पहुंचाना चाहती थी. लेकिन विवाह के बाद सब कुछ ध ारा का धरा रह गया.

धीरे-धीरे अड़ोस-पड़ोस वाले भी रेवा की सास को कुछ न कुछ कह देते लेकिन वह किसी की भी बात का बिल्कुल बुरा नहीं मानती न ही कुछ जवाब देती.

एक दिन रेवा ने अपने पति से कहा, ‘मैं सारा दिन घर में अकेली पड़ी रहती हूँ यदि तुम कहो तो मैं आगे की पढ़ाई जारी रख लूं.

‘नहीं तुम घर से बाहर जाकर पढ़ाई नहीं करोगी, लोग क्या कहेंगे कि साहूकार की बहू को पढ़ने की क्या जरुरत पड़ गई है क्या इसे नौकरी करनी है.’ पति ने जवाब दिया.

‘नहीं कृष्णा मैं तो अपने आप को व्यस्त रखने की कोशिश कर रही हूँ जब तक भगवान मेरी गोद नहीं भरता. ’ यह कहते हुए रेवा की आंखों से आंसू टपकने लगे.

कृष्णा ने आगे बढ़ कर अपनी पत्नी को गले से लगाते हुए कहा, ‘नहीं रेवा ऐसा नहीं सोचते. तुम घर में बैठ कर पढ़ना चाहती हो तो पढ़ो, मुझे कोई एतराज नहीं है.

रेवा ने अब घर में बैठकर इन रचनाओं को संवरना आरम्भ कर दिया. उसने अपना ध्यान पढ़ने और लिखने में लगा लिया और अपने पति को भी आगे पढ़ाई जारी करने के लिए मनवा लिया. वह रोज एक आध गाना या ग़ज़ल लिखने और गुनगुनाने लगी. उसकी आवाज में इतना जादू था कि दिवारें भी गुनगुनाने लगी और धीरे-ध ाीरे वह अपनी मंजिल की तरफ बढ़ने लगी और उसे लगा कि अब उसे आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता. एक दिन उसको एक और नए एहसास ने छू लिया, उसे अपने शरीर में नयापन लगा और इस रुप ने उसके जीवन को नया नाम दिया. वह मां बनने वाली थी. उसके पांव की गति ध ाीमी हो गई. आंखों से खुशी के आंसू बह निकले.

‘अच्छा है जीवन में इस नए अनुभव की भी बहुत आवश्यकता थी. ममत्व के बिना नारी का जीवन अधूरा ही तो होता है. पूर्ण नारी बनने के लिए यह भी आवश्यक है.’ इसी एहसास पर रेवा ने नई ग़ज़ल लिख डाली.

धीरे-धीरे उसकी आवाज घरा के छिद्रों से टकराकर बाहर निकलने लगी और उसकी कलम के चर्चे भी होने लगे. यह सब साथ-साथ चलते-चलते उसके घर एक सुन्दर सी बच्ची का जन्म हुआ. घर भर में खुशी का माहौल था. इस मौके पर उसने अपनी सहेली पल्लवी को भी बुलाया था. पल्लवी ने सबके सामने रेवा की आवाज, उसकी ग़ज़लों की इतनी तारीफ करने हुए कहा रेवा की आवा में जादू है और यह गज़ब की फनकारा है.

‘चलो सखा इस मौके पर एक अच्छी सी ग़ज़ल गुनगुना दो.’ पल्लवी ने रेवा से कहा.

उसके ससुराल वालों को सबके सामने कहना ही पड़ कि वह एक अच्छी ग़ज़ल सुना दे. उसके ससुराल वालों और उसके पति को यह नहीं मालूम था कि वह इतनी अच्छी फनकारा है. उसने वह ग़ज़ल गाई जो उसने मां बनने के एहसास के समय लिखी थी. वहां उपस्थित सभी जन स्तब्ध रह गए और उसके मोतियों से पिरोए शब्दो में भी इस तरह खो गए जैसे कोई स्वप्न में खो जाता है.

‘ऐसी बढ़िया आवाज और ऐसे लेखन को आपने दबा कर अच्छा नहीं किया. ’ पड़ोस में रहने वाले अंकल बोले. ‘मुझे कभी-कभी सुरीली सी आवाज सुनाई देती थी पर यह अहसास नहीं था कि वह रेवा बिटिया की होगी.’

‘अब मुझे समझ में आ गया कि आंटी आप इन्हें कहीं आने-जाने क्यों नहीं देती थी. भई फूलों की खुशबू कोई कब तक छुपाकर रखेगा, एक दिन तो खुशबू बगीचे में महकेगी ही.’ पल्लवी ने कहा.

उस दिन के बाद वह खुल कर गाने और लिखने लगी और एक सुरीली आवाज छिद्रों से छनकर बाहर निकल ही आई.

साहित्य समाचार

राजन 'राष्ट्र भाषा सम्मान' से अलंकृत

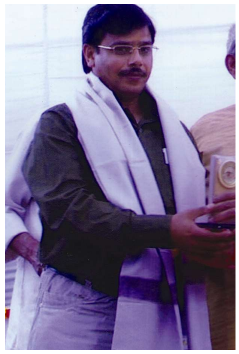

उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक नगर झांसी के राजकीय संग्रहालय में 'हम सब साथ-साथ के तत्वावधान मं अखिल भारतीय राष्ट्र भाषा सम्मेल्लन-२००६ का आयोजन किया गया. इस समारोह में चित्तौड़गढ़, राजस्थान के बाल साहित्यकार राजकुमार जैन को राष्ट्रभाषा सम्मान से मुख्यअतिथि डॉ० श्याम सिंह 'शशि', ने किया. कार्यक्रम में रामप्रसाद खेड़ा, सुभाष चन्दर, विनोद बब्बर विशिष्ट अतिथि तथा वयोवृद्ध विद्वान श्री जानकी शरण वर्मा अध्यक्ष के रुप में उपस्थित थे.

लायन डॉ0 दुबे राष्ट्रीय महासचिव मनोनित

अखिल भारतीय वरिष्ठ नागरिक संध के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेन्द्र कुमार गुप्त द्वारा शिक्षाविद् लायन डॉ० वीरेन्द्र कुमार दुबे को राष्ट्रीय कार्यकारिणी में राष्ट्रीय महासचिव तथा म. प्र. का प्रभारी मनोनित किया गया है.

अभी हाल ही में डॉ० दूबे को विक्रमशीला विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार के त्रयोदश सारस्वत सम्मान समारोह २००८ में वरिष्ठ साहित्यकार एवं शिक्षाविद् लायन डॉ वीरेन्द्र दुबे को उनकी सुदीर्थ हिन्दी सेवा, सारस्वत साधना, कला एवं शोधकार्य तथा राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के आधार पर विक्रमशीला विद्यापीठ की शिक्ष परिषद ने सदस्य मनोनित किया है.

महामहिम राष्ट्रपति से मिले डॉ० विनय मालवीय

भारतीय बाल कल्याा संस्थान, कानपुर के माध्यम से महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल से राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में मिलने गये बाल साहित्यकारों में इलाहाबाद के प्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ० विनय मालवीय भी थे. देश के विभिन्न राज्यों एवं विभिन्न भाषाओं के इन बाल साहित्यकारों ने महामहिम से भेंट कर बाल साहित्य की समस्याओं एवं अपेक्षाओं से उन्हें अवगत कराया. बाल साहित्यकारों ने अपनी नवीनतम पुस्तकें भी राष्ट्रपति महोदय को भेंट की.

महामहिम राष्ट्रपति से मिलने वालों में डॉ० राष्ट्रबंधु, श्री शमसेर अहमद खान, डॉ० शकुन्तला कालरा, डॉ० नागेश पाण्डेय, श्री राजेन्द्र दुबे, श्री कृष्ण शलभ, डॉ० दिनेश चमोला, डॉ० रमेश चन्द्र पंत आदि प्रमुख बाल साहित्यकार थे.

मर्मज्ञ को राष्ट्रीय समरसता सम्मान

राष्ट्रीय समता स्वतन्त्र मंच, दिल्ली द्वारा आन्ध्र भवन, दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में पूर्व राज्यपाल एवं पूर्व मुख्य न्यायमूर्ति, राजस्थान श्री एन.एल. टिबरवाल एवं सीबीआई के पूर्व निदेशक श्री जोगिन्दर सिंह के हाथों 'राष्ट्रीय समरसता सम्मान' ज्ञानचन्द्र मर्मज्ञ, बेगलौर कर्नाटक को प्रदान किया गया.

प्रो० शरद खरे को अनेकों साहित्य सम्मान

मंडला, म.प्र. के सुपरिचित साहित्यकार प्रो. शरद नारायण खरे को उनको समर्पित साहित्य साधना के लिए अनेक संस्थाओं ने सम्मानित किया. इनमें राजेश्वरी प्रकाशन, गुना, द्वारा 'उजास सम्मान', साहित्यांचल भीलवाड़ा द्वारा 'साहित्याचंल सारस्वत सम्मान', गुंजन कला परिषद द्वारा ' श्री बाल पाण्डेय सरस्वती पुत्र अलंकरण', राष्ट्रकिंकर दिल्ली द्वारा 'हास्यश्री अवार्ड', एवं स्वर्ग विभा बेवसाईट द्वारा इलाहाबाद में आयोजित साहित्य मेला मे छायावादी कवयित्री डॉ० तारा सिंह सम्मान प्रदान किया गया.

अगर आप चाहते है कि....?

आपकी मुहल्ले की सड़को में गढडे हो, देश के महत्वपूर्ण सुरक्षा के दस्तावेज बिक जाए, महंगाई दिन दूनी रात चौगुनी बढ़े, आतंकवाद बढ़े, गुडां गर्दी, अपराध दिन दूनी रात चौगुनी बढ़े, आपका कोई भी काम बिना पैसा दिए न हो, बिजली, पानी का बिल न देना पड़े, तो भारतीय भ्रष्टाचार पार्टी के प्रत्याशियों को वोट दें.

<u>अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें, अपना मत सोच समझ कर दें</u>

निवेदकः दाउजी, त्रिलोक अध्यक्ष, भारतीय भ्रष्टाचार पार्टी

स्वास्थ्य

तुलसी

सुरजीत सिंह साहनी,
कोटा, राजस्थान

तुलसी एक ऐसा अनोखा औषधीय गुणों से भरपूर विलक्षण पौधा है जिसमें अनेक रोगों की चिकित्सीय अद्‌भूत शक्ति है. वनस्पति विज्ञान में तुलसी को आसिमय सेक्टसली के नाम से भी विश्वभर में जाना जाता है. तुलसी के अन्य नाम जैसे-सुरभि, श्यामा, वृन्दा, रामा, शुलभा, वैष्णवी, गौरी इत्यादि इसके महात्मय, धार्मिकता एवं सूक्ष्म प्रभावों को ही परिलक्षित करते है. वनस्पतियों में भी तुलसी बहुत उपयोगी गुणों से भरपूर, सस्ती-सूलभ और सुन्दर वनस्पति है जिसमें भौतिक, दैविक एवं दैहिक तापों से संघर्ष करने की क्षमता है.

मुख्यतया तुलसी की दो प्रजातियां है- श्री तुलसी जिसकी पंत्तियां हरा रंग लिये होती है, दूसरा कृष्ण तुलसी जिसकी पत्तियां कुछ नीलें-बैंनी रंग की होती है. तुलसी के पौधों कि अधि ाकता वाले स्थान पर वायु शुद्ध, पवित्र एवं साफ रहती है. 'तुलसी कानंन चेवगृहे यस्यावतिष्ठते' एवं 'तुलसी गंध ा मांदाम यम गच्छति मारुतः' अर्थात शास्त्रोंनुसार जिस घर में तुलसी का पौधा हो वह स्थान पवित्र हो जाता है तथा तुलसी की सुगन्ध वाली वायु से यम भी नहीं आते. तुलसी का पौधा अक्सर एक से ढाई फुट तक ऊंचा होता है जो कि विभिन्न शाखाओं में फैला रहता है. पत्ते गोलाई लिये हुए एवं दीर्घवृत्ताकार छाया में तीव्र सुगन्ध ायुक्त लम्बे होते है. जहां मंजरीयों में तुलसी के बीज रहते हैं.

यदि स्वच्छ साधारण जल में तुलसी कि कुछ पत्तियां भिगों कर रख दी जावें अथवा उसको थोड़ा सा नरम कर लिया जावे जो वह जल तुलसी के समान ही गुणकारी हो जाता है जिसके सेवन मात्र से ही अनेक रोगों में लाभ प्राप्त हो स्मरण शक्ति तीव्र हो जाती है, बल-बुद्धि एवं स्फुर्ति में वृद्धि होने लग जाती है. इसी कारण ही प्राचीनकाल से ही तुलसी जल सेवन की पद्धति ध ार्मिकता से जुड़ी हुई रही है जो आज भी यथावत है. तुलसी के सुखे डन्ठल पाचन शक्ति को बढ़ाते है, वही तुलसी के बीज कई रोगों में रामबाण औषधी का कार्य करते है. सौन्दर्य वर्धक गुणों से भरपूर तुलसी शरीर के रक्त को शुद्ध कर चर्म, मांस एवं हड्डियों में प्रविष्ट हुए रोगों को दूर कर सुन्दरता में निखार लाती है. तुलसी की सुखी पत्तियों को पीस कर चेहरे और शरीर पर लेप करने से शरीर स्वस्थ सुन्दर बना रहता है. तुलसीयुक्त चाय पीने से लाभ प्राप्त होता है. तुलसी को हिचकी, श्वांस-खांसी, दुगर्न्ध, रक्तदोष, कोढ़, पित्त, आलस्य, सुस्ती, ज्वर निवारक एवं त्रिदोष नाशंक के रुप में प्रयोग किया जाता है. यह कहना स्वर्था उचित ही होगा कि तुलसी का सम्पूर्ण पौध ही फूल पत्तियों से लेकर जड़ तक औषधीय गुणों से भरपूर है.

तकिये पर स्वास्थ्य पर कुप्रभाव

तकिये का इस्तेमाल स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालते हुए कई बीमारियों को भी निमंत्रण देता है जैसा कि 'तमिलनाडु राज्य योगासन संगम' द्वारा पिछले २० वर्षो से किये जा रहे है अध्ययनों से प्रमाणित हो रहा है. हृदय व नेत्र रोगों के अतिरिक्त अस्थम रोग की भी सम्भावना बनी रहती है क्योंकि ऊंचे तकिये पर सिर रखकर सोने से दिमाग तक रक्त प्रवाह में गतिरोध उत्पन्न होता रहता है और यही रक्त प्रवाह ही शरीर की समस्त क्रियाओं पर नियंत्रण रखता है. तकिये का उपयोग न करने वाले अन्य के मुकाबले अधिक बुद्धिमान एवं निरोगी रहते है.

धमनियों तक पर्याप्त मात्रा में रक्त नहीं पहुंचने के कारण हृदय पर बुरा असर पड़ता है जो कि दिल के दौरे का भी कारण बन सकता है. ऑखों व दांतो पर इस प्रकार से सीधा असर पड़ता है और ऑक्सीजन का प्रवाह अवरुद्ध रहने से अस्थमा रोग होने की सम्भावना भी बढ़ जाती है. सोते समय सिर के नीचे तकिये के स्थान पर हथेली का इस्तेमाल करने का सुझाव 'तमिलनाडु राज्य योगासन संगम' द्वारा किया गया है कि तकिये का प्रयोग नहीं करने वाले व्यक्ति अन्य के मुकाबले अधिक निरोगी एवं दीर्घायु होते है एवं उनके बाल भी अधिक समय तक काले बने रहते हैं.

पहेलियॉ

१. **भागता** रहता है, घोड़ा नहीं, कूकू कहते है, मुर्गी नहीं धुआ छोड़ते है चूल्हा नहीं क्या है बोलो? उत्तर- रेल

२. सफेद साड़ी पहनी है ऊपर से सुंदर है, अंदर से कुरुप खींचने से मुंह पूरा भरता है, छोड़ने से सब ओर फैलता है क्या है बोलो? उत्तर-सिगरेट

३.पेटी खुलने से कृष्ण आता है क्या है बोलो- उत्तर-मूॅगफली

४. आते ही सब हाथ दिखते हैं क्या है. उत्तर- बस

५.बढ़ई किये हुए गाड़ी नहीं, मानव किये हुए यंत्र नहीं, एक मिनट भी फुरसत नहीं. **भूमि**

६. जो करते है वही करते है बच्चा नहीं, हॅसने से हॅसते है बंदर नहीं, क्या है?
उत्तर-आईना

जे.वी.नागरत्नमा, कर्नाटक

खेल की दुनिया

कबड्डी का निर्धारित सूचांक सिद्धात

आयु वर्षो में+ऊँचाई सेमी में + वजन किलोग्राम में सूचांक उदाहरण –किसी बालक की आयु १५ वर्ष है. लम्बाई १४० सेमी. है, वजन ३५किग्रा है ३६ वजन, १६० सूचांक.

खेल का मैदानःमैदान के उस भाग से है जहां पर स्ट्रगल प्रारम्भ होने से पूर्व खेल खेला जाता है। इसका माप पुरुष व जूनियर बालक वर्ग में १२.५X 8मी० व महिला, जूनियर बालिका, सब जूनियर बालक व जूनियर बालकि वर्ग में ११X 6 मी० होता है।

सीमा-खेल मैदान के चारों तरफ की रेखाओं को सीमा रेखा कहते है।

लॉबीजः–खेल मैदान की लम्बाई के दोनों ओर १ मी० की चौड़ाई में डाली जाने वाली स्ट्रोप लॉबी के नाम से जानी जाती है। यह खेल मैदान में सम्मिलित नहीं होती है लेकिन जब स्ट्रगल होता है तो लॉबी खेल में सम्मिलित हो जाती है।

मध्य रेखाःखेल मैदान को दो बराबर भागों में विभक्त करने वाली रेखा को मध्य रेखा कहते है।

कोर्ट-मध्य रेखा द्वारा बराबर विभक्त दो भाग को कोर्ट कहते है।

अनिवार्य रेखाःकोर्ट के मध्य रेखा के समानान्तर दोनों ओर समान दूरी पर डाली गयी रेखा को बाक लाइन कहते है। मध्य रेखा से एक लाइन की दूरी पुरूष व जूनियर बालक वर्ग में ३.७५ मी० व महिला जूनियर बालिका, सब जूनियर बालक व बालिका वर्ग में ३. ०० मी० की दूरी पर होगी।

बोनस लाइनःबाक लाइन से १ मी० की दूरी पर अन्तिम रेखा की तरफ डाली जाती है।

कैंटःएक स्वास प्रक्रिया में निरन्तर बिना किसी रूकावट व आवाज बदले अधिकृत शब्द "कबड्डी" के स्पष्ट उच्चारण को कैंट कहते है।

रैडरःविपक्षी के कोर्ट में कैन्ट सहित प्रवेश करने वाली खिलाड़ी को रैडर कहते है। रैडर को विपक्षी कोर्ट छूने के पहले अर्थात् पहले कैन्ट प्रक्रिया आरम्भ करना अनिवार्य होता है।

एण्टी रैडर या एन्टीजःजिस दल के कोर्ट में रेड दी जाती है उस दल के प्रत्येक खिलाड़ी को एण्टी रैडर या एन्टीज कहते है।

स्वांस तोड़नाः"कबड्डी" शब्द के लगातार स्पष्ट आवाज के दोहराने में बाधा आना व दुबारा स्वांस लेने की प्रक्रिया प्रारम्भ करने को Loosing the cant कहते है।

विपक्षी को आउट करनाःयदि रैडर बिना खेल नियमों का उल्लंघन किए विपक्षी खिलाड़ी को छू ले और कैन्ट सहित अपने कोर्ट में वापस आ जाय तो विपक्षी दल के खिलाड़ी को आउट माना जाता है।

रेडर को पकड़नाः यदि विपक्षी खिलाड़ी या खिलाड़ियों द्वारा बिना खेल नियमों का उल्लंघन किये रैडर को अपने कोर्ट में स्वांस टूटने तक रोके रखते हैं और रैडर को अपने कोर्ट में नहीं पहुंचने देते हैं, उसे कैच मी द रैडर कहते हैं।

कोर्ट में सुरक्षित पहुंचनाःयदि रैडर बिना खेल नियमों का उल्लंघन किये अपने शरीर के किसी भी भाग से स्वांस प्रक्रिया सहित अपने कोर्ट को छू लेता है, उसे सुरक्षित पहुंचना कहते हैं।

टच स्पर्शःयदि रैडर विपक्षीा खिलाड़ी या खिलाड़ियों को अपने शरीर के कोई भी हिस्से से या कपड़े, जूते व अन्य किसी आउट फिट से स्पर्श करें उसे टच स्पर्श कहते हैं।

स्ट्रगल (संघर्ष):जब विरोधी खिलाड़ी या खिलाड़ियों के साथ सम्पर्क रैडर के साथ होता है तो उसे स्ट्रगल कहते हैं। स्ट्रगल के समय लॉबी मैदान में सम्मिलित मानी जाती है।

रेडःजब आक्रमण रैडर विपक्षी दल के कोर्ट में स्वांस क्रिया सहित प्रवेश करता है। उसे रेड कहते हैं।

सफल रेडःजब रेडर विपक्षी दल के कोर्ट में रेड प्रारम्भ कर बॉक लाइन को पार करने के पश्चात् अपने कोर्ट में स्वांस प्रक्रिया सहित वापस पहुंच जाता है उसे हम सफल रेड कहते हैं।

परश्यू (चलती):जब विरोधी रेडर बिना नियमों का उल्लंघन किये स्वांस प्रक्रिया के साथ वापस जाते रैडर को आउट करने के लिए तेजी से आक्रमण कर स्पर्श करने का प्रयास करता है उसे परश्यू (चलती) कहते हैं। परश्यू (चलती) सिर्फ एक ही दिशा में लागू होगा।

जब रैडर खिलाड़ियों को "नियरली" स्पर्श करें और रैडर अपने कोर्ट में सुरक्षित पहुंच जाता है ऐसी स्थिति में रैडर को परश्यू किया जा सकता हे। निम्नदशाओं में परश्यू लागू नहीं होगा अम्पायर या रेफरी द्वारा रेड निरस्त करने में। यदि रैडर विपक्षी दल के खिलाड़ियों को पकड़ कर निष्प्रभावी कर अपने कोर्ट में सुरक्षित पहुँच जाता है ऐसी स्थिति में इस रैडर को चलती नहीं मार सकते।

बोनस लाइन को पार करनाः बोनस लाइन को पार उस समय समझा जायेगा जब रेडर का सम्पर्क वोनस लाइन को पूर्णरुपेण क्रास कर लेता है।

लोनाःजब एक दल विपक्षी दल के सभी खिलाड़ियों को आउट कर देता है और कोई भी खिलाड़ी मैदान में पुनः प्रवेश की स्थिति में नहीं रहता है तो वह दल लोना अर्जित कर लेता है।

प्रोमिला भारद्वाज, मण्डी, हि.प्र. की कुछ रचनाएं

बिखराव

टूटे पत्तों से अक्सर
क्यूँ रहे विखर,
पवन संग डोलते
इधर कभी उधर,
सामर्थ्य विहीन उड़ रहे
सूखोगे हो सुनहरे
चरमरा के समय के पैरों तले,
समय से पूर्व, लुप्त
होने की धुन में मुक्त
मुक्त होना, नहीं अनुचित
अनुचित है आसक्ति
निज स्वार्थ पूर्ति में
अन्धानुकरण व अति
भ्रमदायक मार्ग अपनाना
स्वप्नों के पीछे भागते-भागते
बन के रह जाना स्वयं सपना
देख न पाएँ जिसे
जागृत चक्षु
न ही कोई अपना,
अपनों से अलगाव
अपनी जड़ों से
शाखाओं से दूर
डोलते न फिरो,
टूटे पत्तो से
यूं न बिखरो।

++++++++++++++++++++++++

झरोखे खुले रखें

खुले न रख सकें
घरों के दरवाजे
खिड़कियाँ झरोखे
कोई बात नहीं,
दिलोदिमाग के
दरवाजे, खिड़कियां
झरोखे खुले रखें।
उन्नत विचारों के
ताजा झोंकों के
झकझोरने से
रुढ़िवादी सीलन
जाती रहे,
आती रहे
किरणें विकास की
अज्ञानता के तम को
दूर भगाती रहे,
भ्रमजाल के जाले
न फैलने पाएँ
घृणा की परतें
पसरने न पाएँ
सद्‌भावनाओं को कभी
जंग न लगने पाए,
प्रेम सहचार की
स्नेहिल बौछारें
रिम-झिम, रिम-झिम
सदैव भिगोएँ
दिलो दिमाग को
सद्प्रेरणा से
करें भलाई
करवाएँ
कुछ इस तरह से
दिलो दिमाग के
झरोखे खुले रखें।

++++++++++++

लोना में उस दल को २ अंक अतिरिक्त मिलता है।

बोनस अंकःजब रैडर बोनस लाइन को पूर्ण रुपेण पार कर लेता है तो रैडर को एक अंक बोनस प्वांइट मिलेगा और रेडर हो जाएगा। यह नियम विपक्षी के पाले में ६ खिलाड़ी का होना आवश्यक है। इस को स्कोर सीट में त्रिभुज से दर्शायेंगे।

कबड्डी टीम के खिलाड़ियों की संख्याः-प्रत्येक दल में १२ खिलाड़ी होगें। एक समय में सात खिलाड़ी मैदान में खेल सकेंगे एवं बाकी खिलाड़ी आरक्षित होंगे।

खेल का समयःपुरूष व जूनियर बालक वर्ग में २०-२० मिनट व महिला जूनियर बालिका, सब जूनियर बालक व सब जूनियर बालिका वर्ग में १५-१५ मिनट के दो अर्द्ध होंगे। मध्यान्तर का समय ५ मिनट का होगा। विश्राम के पश्चात् कोर्ट बदले जायेगें।

खेल अनिर्णित होने परःखेल अनिर्णित होने पर ५ रेड का नियम लागू होगा।

सडन डेथ नियमःअगर ५ रेड में खेल का निर्णय नहीं होता तो सैड इंडेड नियम लागू होगा।

रेडर को पकड़नाः चेन सिस्टम, टू टू थ्री का चेन बनाकर, सिंगल कैच में टखने को पकड़ना, दोनों पैरों को एक साथ कैच करना चाहिये, ट्रंक कैच कमर पकड़कर उठाना

++++++++++++++++++++++

पृष्ठ १४ का शेष पर्यावरण संरक्षण...

जारी रह सकता है. वास्तव में वही विकास सतत् हो सकता है जो प्रकृति के अनुकूल हो. पर्यावरण संरक्षण आज एक उभरती हुई प्रमुख समस्या अवश्य है लेकिन इसमें संभावनाएं भी अनंत है. मानव प्रकृति से और करीब आता जा रहा है और टूट रही है वर्जनाएं और भ्रांतियां, और ज्ञात हो रहे ज्ञान के अनेक पहलू जो विज्ञान के सम्मुख कभी एक प्रश्नवाचक चिन्ह के रुप में उपस्थित थें यहां आवश्यकता केवल इस बात की है कि मानव अनजाने या मूर्खतावश प्रकृति के लिए विनाशकारी सिद्ध हो चुकी गतिविधियों का ईमानदारी पूर्वक त्याग कर दे और तब पर्यावरण संरक्षण मानव के लिए एक जटिल समस्या नहीं वरन जीवन पद्धति वन जायेगा और इसी पर्यावरण अनुकूल पद्धति में है विकास की अनंत संभावनाएं जिन्हें सतत विकास जैसे प्रयासों के माध्यम से उभारने का उपक्रम जारी है. आइए, फिर से हम मिलजुलकर यह कल्पना साकार करें.

वंदे मातरम् सुजलाम सुफलाम मलयज शीतलाम शस्य श्यामलाम मातरम्।

आपका कार्य सराहनीय है

आपके द्वारा प्रेषित फरवरी ०९ सुश्री बी.एस.शांताबाई विशेषांक प्राप्त हुआ. सुश्री शांताबाई का हिंदी कार्य का विशेषांक प्रकाशित करके आपने महिला क्या कर सकती है उसकी जानकारी दी. इनसे मैं ४० वर्षो से परिचित हूँ.

गोकुलेश्वर कुमार जी आपका कार्य सराहनीय है.

एस.बी.मुरकुटे, बेलगांव, कर्नाटक

++++++++++++++++++++++++

आप एक सफल आयोजक व सम्पादक हो

मान्य द्विवेदी जी,

सादर अभिवादन. बहन बी.एस.शांताबाई जी के विशेषांक ने आपको निवार्ध रुप से आपको एक सफल आयोजक व सम्पादक बना दिया है क्योंकि आयोजन के एक मास की अवधि में विशेषांक देना साधारण श्रम की बात नही है. सौवें अंक के रुप में एक उत्कृष्ट प्रस्तुति देने पर बधाई.

वंशीराम शर्मा, गुड़गाव, हरियाणा

++++++++++++++++++++++++

दो टूक संपादकीय के लिए आप धन्यबाद के पात्र है

पत्रिका का अंक मिला. श्री त्रिपाठी जी की कहॉनी 'माधुरी' के प्रोफेसर साहब ने बहुत प्रभावित किया, ऐसे लोग मिलते कहा है? इन्दु जी की लघु कथाएं बड़ी मारक है. उन्हें बधाई. स्वास्थ्य में खुल्लरजी का लेख ज्ञान बर्धक है. बहुतों की अपनी गृहस्थी बचाने में मददगार साबित हो सकती है. काव्य पक्ष अंक की ऊर्जा है. ताजगी से परिपूर्ण रचनायें मन में उतर जाती हैं. खरे खरे दो टूक संपादकीय के लिए आप धन्यबाद के पात्र है. काश, हमारे वोटप्रिय नेता कभी राष्ट्र के बारे में सोचते.

आनन्द बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र

++++++++++++++++++++++++

आपको कोटिशः बधाई

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदीजी

विश्व स्नेह समाज का फरवरी ०९ अंक मिला. सुश्री बी.एस.शांताबाई विशेषांक प्रकाशित करके आपने एक उत्कृष्ट कार्य किया है. बहुत ही श्रेष्ठ है यह अंक आपको कोटिशः बधाई.

पं.नरेश कुमार शर्मा, संपादक, मुंबई की बातें, जोगेश्वरी, मुंबई

++++++++++++++++++++++++

शांताबाई वास्तव में इसकी हकदार है

प्रिय आत्मन्

पत्रिका का सौवा अंक सुश्री बी.एस.शांताबाई पर केन्द्रित विशेषांक प्राप्त हुआ. बहुत प्रसन्नता हुई. डॉ. बुद्धिराजा पर केन्द्रित सफल विशेषांक के पश्चात यह अंक भी आपके परिश्रम पूर्ण अथक सम्पादन का द्योतक है. कर्नाटक से महिला हिन्दी सेवा समिति को समर्पित सुश्री बी.एस.शांताबाई वास्तव में इस विशेषांक की हकदार है. उन्होंने हिन्दी के प्रचार प्रसार में बहुत काम किया है और बहुत संस्थानों से सम्मानित भी हो चुकी है. उनके श्रेष्ठ कार्यो को नमन करते हुए इस श्रेष्ठ विशेषांक के सपांदन और प्रकाशन पर आपको हार्दिक बधाई और साधुवाद.

आपका आत्मरुप

डॉ० केवल कृष्ण पाठक

संपादक, रवीन्द्र ज्योति मासिक, जीन्द, हरियाणा

++++++++++++++++++++++++

माननीय श्री गोकुलेश्वर जी

सप्रेम नमस्ते

आपकी भेजी पत्रिका का शान्तादेवी विशेषांक प्राप्त, धन्यबाद. बहुत खुशी हुई कि मैं भी दो महीने तक बेगलूर में उनके विद्यालय मं रहा था. उनके अभिनन्दनार्थ विश्व स्नेह समाज ने एक विशेषांक निकाला जो सराहनीय है, जिसमे कई गण्य मान्य महानों ने अपना वक्तव्य प्रकट किया है.

मैं भी गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के तत्वावधान में भरसक हिंदी की सेवा कर रहा हूँ.

वी.के.बालकृष्ण नायर, कोषिक्कोड़,

++++++++++++++++++++++++

श्रद्धेय श्री द्विवेदीजी,

सस्नेह नमस्कार,

६वें साहित्य मेला में सहभागिता का आमत्रंण मिला, पर विलम्ब से और मन में विचार आया-का वर्षा जब कृषि सुखाने. अगर समय पर पत्र मिलता तो अवश्य आता खैर आपने याद किया, एतदर्थ आभारी.

रामदेव प्रसाद शर्मा,खगड़िया, बिहार

++++++++++++++++++++++++

प्रिय भाई,

पत्रिका का सौंवा अंक मिला. हृदय से आभारी हूँ. पत्रिका से जुड़ना है कैसे भी अब देखो! मौन तुम्हीं अब मेरे साथी, शब्द नहीं अब देते साथ!! उम्र जितनी कटती जाती है, मौत उतनी पास आती जाती है. बहुत प्यार आभार धन्यबाद. स्नेहाशीष के साथ आपका

किशन कुमार अग्रवाल 'केन', घाटकोपर, मुंबई

++++++++++++++++++++++++

कवि के भेद रहित जीवन में
प्रायः दो संगिनी रही है
करुणा रही विवाहित होकर
मानवता मानस की रानी।
कवियों की तो बात और है
तुमको क्या बतलाऊँ ज्ञानी।।

डॉ० सत्यकाम शिरीष ,कानपुर

++++++++++++++++++

आदरणीय श्री द्विवेदी जी

नव वर्ष की कोटिशः मंगल कामनाएं। आप मॉ हिन्दी की निस्वार्थ सेवा कर रहे है। यह अनुपम कार्य है. यह मातृभूमि की सेवा है। भारतमाता के आप सच्चे भक्त है. साहित्य मेले का आयोजन इसी दिशा में एक पावन कार्य है, यज्ञ है.

भूरदास सौरभ, महाराष्ट्र

++++++++++++++++++++++++

प्रिय श्री द्विवेदीजी सप्रेम हरी स्मरण।

पत्रिका का एक लम्बे अंतराल पश्चात पाकर अच्छा लगा और उसमें 'मानस में नारी का आदर्श'मेरा लेख देखकर और भी ज्यादा. इस स्नेह के लिए आभारी हूँ. इस अंक में तीर्थराज प्रयाग-इतिहास के आइने में, के द्वारा आपने प्रयाग से संबंधित कई नई जानकारियां पाठकों तक पहुँचाने का सराहनीय प्रयास किया है. मरीचिका, मेरा क्या कसूर दोनों कहानियां अच्छी लगी. उत्तरोत्तर उज्जवल भविष्य की कामना के साथ.

घनश्याम दास गुप्ता, भोपाल, म.प्र

लघु कथाएं

भाषण

प्रतिष्ठित दहेज विरोधी संस्था के अध्यक्ष ने जोरदार दहेज विरोधी भाषण दिया. सबने उनकी खूब सराहना की.

कुछ दिन बाद मैं अपनी बेटी की शादी का प्रस्ताव लेकर उनके यहां गया, तो उन्होंने कहा चार पहिया वाहन के साथ कैश कितना दे पाओगें.

तो मैं चौंका कहा आपभी मजाक करते हैं. आप तो दहेज विरोधी संस्था के अध यक्ष है, उस दिन मैंने भी आपका भाषण सुना था सब बहुत ही प्रशंसा कर रहे थे.

तो उन्होंने ने कहा कि वह हमारी प्रोफेशनल लाइफ थी, यह हमारी पर्सनल लाइफ है, भाषण देने के लिए होता है या पालन करने के लिए. मैं चुपचाप चला आया.

संजय कुमार चतुर्वेदी'प्रदीप',खीरी,उ.प्र

++++++++++++++++++++++++

पहचान

एक अप्रवासी भारतीय घूमने की इच्छा से अमेरिका से भारत आया. एयरपोर्ट से बाहर निकल कर टैक्सी करके वह कुछ दूर गया तभी तेज बारिश होने लगी. देखते ही देखती सड़क पर चारो ओर पानी भर गया और फिर हर तरफ गंदगी दिखायी देने लगी.

यह देखकर वह आदमी नाक सिकोड़ते हुए टैक्सी ड्राइवर से भारत की बुराई करने लगा. उसने कहा, 'यहॉ के लोग बहुत गंदे होते हैं. उन्हें गंदगी में रहना अच्छा लगता है. सफाई तो उन्हें पसंद ही नही होती. मेरे अमेरिका में बहुत सफाई रहती है. वहॉ गंदगी नहीं रहती. ' फिर कुछ पल चुप रहने के बाद वह अमेरिका की तारीफ करते हुए कहने लगा-' मेरे अमेरिका में ऐसा होता है, मेरे अमेरिका में वैसा होता है. अगर तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास न हो तो अमेरिका जाकर देख लो कि वहॉ कितनी सफाई रहती है. मैं जितनी बड़ाई कर रहा हूँ उससे कई गुना वह अच्छा देश है.'

ड्राइवर जो इतनी देर से उस आदमी की बातें सुन रहा था अन्त में उससे चुप नहीं रहा गया. उसने कहा, 'लेकिन हम भारतीय तुमसे अच्छे है. जो कह तो सकते हैं कि हम भारतीय है, परन्तु तुम'

'क्या मतलब?' उस आदमी ने पूछा.

'अरे, इतना भी नहीं जानते. भारत में तुम्हें 'अप्रवासी भारतीय' कहा जाता है और अमेरिका में 'भारतीय मूल का' कहा जाता है. तुम न तो भारतीय हो ना ही अमेरिकी.'

अब वह आदमी क्या कहता. उससे कुछ बोलते नहीं बना. वह चुपचाप ड्राईवर का मुँह देखने लगा.

वन्दना मालवीय, इलाहाबाद, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++

कमीशन

उस रोज मैं तालाब में नहाने गयी थी. उसी वक्त एक अधेड़ उम्र के अधें व्यक्ति दूसरी घाट पर नहा रहे थे. तभी कुछ देर बाद एक बुढ़िया अपनी छड़ी ठोकते हुए नहाने आयी. वह अपने हाथ में कोई चीज पकड़ी हुई थी. आते ही उसने मुझसे बोली- देखों न बेटी क्या चीज हैं. आते वक्त रास्ता से उठाए हैं. मैंने उलट पुलट कर देखी, अरे यह तो पासबुक हे. इसमें उनके नाम के साथ फोटो भी लगे हुए हैं. क्यों न? मैं उनका पासबुक दे दूँ. तब बुढ़िया बोली तुम्हें कष्ट उठाने की कोई जरुरत नहीं है मैं स्वयं दे दूँगी. भला मैं उनका पासबुक क्या करुंगी. बुढ़िया नहा लेने के बाद चलते हुए उस व्यक्ति बोली-भैया जरा जाते वक्त मेरे घर होते हुए चलना तो. वह व्यक्ति हॅसते हुए बोला अरे! मैं तुम्हारे घर किस काम से आऊँ. अरे! मैं आपका पासबुक रास्ते से उठायी हू जिससे आप पैसा छुड़ाते हैं. ओह! मुझे इसकी जरा भी याद नहीं जेब में भरे थे सो रखना भी भूल गये. यदि मेरा पासबुक उठाए हे तब दे दीजिए. तभी बुढ़िया तपाक से बोली-इतनी सहज से मैं आपको कैसे दे दूॅ. पहले हमें इसका कुछ कमीशन भी मिलेगा तब न. कहकर चली गयी.

मरणासन पर भी कमीशन उफ्!

दहेज

सबसे दिल खोलकर बातें करने वाला साधारण युवक उसे देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता कि उसका दिल इतना काला होगा. अपनी शादी में उसने मोटरसाइकिल की मॉग रखी सो लड़की वालों जमीन बेचकर एक मोटरसाइकिल दहेज के रुप में दिए. परन्तु वह उससे खुश नहीं हुआ और भी किसी चीज की इच्छा थी. लेकिन उस वक्त उसने कुछ नहीं कहा. शादी के दो-तीन माह बाद से ही लड़की को ससुराल वाले प्रताड़ित करना शुरु कर दिए. एक दिन युवा अपनी पत्नी से काफी झिड़ककर कहा-तुम्हारे बाप ने हमें दहेज में कहॉ कुछ सामान दिया है, एक मोटरसाइकिल ही इस जमाने का बड़ा चीज नहीं हुआ. आजकल तो शादी में रंगीन टीवी, कूलर, फ्रीज, आलमारी कितने-कितने समान मिलते है परन्तु तुमनसे ये चीजें कहा लायी. जब तक तुम एक रंगीन टीवी अपने बाप से लेकर नहीं आओगी. इस घर में तुम्हारी कोई जगह नहीं कहकर लड़की को उसने घर से निकाल दिया. लड़की रोती हुई अपने मायके पहुची और अपना सारा किस्सा सुनायी. परन्तु गरीब मॉ-बाप कहॉ से दे पाते शादी के पूर्व ही सब कुछ बेच दिए है. लड़की रोती हुई वापस लौटी उसके ससुराल वाले उसे खाली हाथ देखकर ससुराल वाले उसका गला घेंटकर मार दिए.

ललिता कु०प्रजापति, सिंहभूमि, झारखंड

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नामः फुलों से दोस्ती
रचनाकारः श्रीमती कंचन सिंह
समीक्षकः रामचरण यादव, बैतूल, म.प्र

उत्कृष्ट विचारों की पृष्ठभूमि

यदि हमारे पास अन्तरंग संवेदना है तथा उसे अभिव्यक्ति करने हमारे पास कौशल है, तो हमारे आस-पास जो कुछ भी घट रहा है और हम महसूस भी कर रहे है उसे अभिव्यक्ति तो मिलेगी ही. ऐसा ही कुछ श्रीमती कंचन सिंह के साथ हुआ है इन्होंने जो देखा अनुभव किया उसे कम शब्दों में लघुकथा के रुप में प्रस्तुत किया. श्रीमती सिंह की लघुकथाएं जहां एक ओर मन की व्यथाएँ दूर करती है वहीं दूसरी ओर समाज की वर्तमान दशा और दिशा का बोध कराती है. हालांकि इनकी यह पहली कृति है, किन्तु इसी में इनकी मनोवृत्ति, संस्कृति प्रकृति व्यक्ति स्थिति-परिस्थिति आदि का स्पष्ट दर्शन हो जाता है. इस अनूठी कृति में सृजन शीलता का उजला दर्पण ही नहीं अपितु इसमें अदभुत आकर्षण भी है.

++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः प्रणय-गान
रचनाकारः पंडित नरेश कुमार शर्मा
कीमतः५१ रुपये
सम्पर्कः सी-८०३, सेटेलाइट पार्क गुफा मार्ग, जोगेश्वरी(पूर्व), मुंबई-४०००६०

प्रस्तुत गीत संग्रह पंडित नरेश कुमार शर्मा 'लखनवी' की काएक निराला संग्रह ही है. युवा मन को छूती ये रचनांए युवाआं ज्यादे प्रभावित करती प्रतीत होती है. तीन खण्डों में विभाजित गीत संग्रह के प्रथमखंड में प्रणय गान में कुल ३८ रचनाएं, द्वितीय खण्ड में प्रेमांकुर मं १६ रचनाएं व तृतीय खण्ड में भावगीत १४ रचनाएं व दो कौवालियां है. तीनों ही खंण्डो में प्रीत की रीति सदा चली आयी, प्रेम बिना जग सुना भाई. को दर्शाती रचनाएं ही है.

तार न जोड़े मन के, तो फिर जोड़ा क्या,
घाव न फोड़े मन के, तो फिर फोड़ा क्या?

+++

दुनिय में सिवा प्यार के, कुछ भी करना ही नहीं हमको,
पूजना तुमको ही फकत, देखते रहना है अपलक तुझको।

++++++++++++++++++++++++++++++++++

तेरी खुशबू से भरा है, मेरे इस दिल का चमन,
तेरे प्यार से है रोशन, दुनिया में मेरा जीवन।

++++++++++++++++++++++++++++++++++

तेरे मन की चितवन ने, मुझको ललचाया है,
पल-पल मेरे जीवन की, तू सुखमय छाया है।

++++++++++++++++++++++++++++++++++

रखना संभाल कर, मेरे प्यार की निशानी,
कभी याद आ जाये, वह दासतां पुरानी।
आगे आप पढ़कर खुद समझ सकते है.

पुस्तक का नामः झुनझुना
लेखकः किसान दीवान
समीक्षकः हितेश हंस, व्यवस्थापक, अभ्युदय साहित्य समन्वय मंच, महासमुद्र

अबोध मन मस्तिष्क को स्वर लय, तान और ज्ञान उदधि में गोता लगवाकर बोधमय बनाने का विशुद्ध प्रयास है बाल गीत कविता संग्रह झुनझुना. गीतकार श्री दीवान जी ने कुछ प्रेरक नारे भी जोड़े है. १४ वर्ष की उम्र से ही आशाओं को समझने और समझाने लगे श्री दीवान ने ऐसी परिपक्व कलम चलायी है कि रचनाओं का स्तरीय होना स्वाभाविक है. देखिए कुछ रचनाओं के अंश-

हाथ है अपना, जीवन संग हे अपना पेट।
छाती में धड़कन वीरों के, किस्मत के शुभ रेख।।

++++++++++++++++++++++++++++++++++

झूठी शान बघारने वाले, पड़ते नहीं हमारे पाले
आदर बड़ों का जो न जानें, हम उनको उल्लू मानें।
इरादों के हम पक्के हैं, बच्चे मन के सच्चे है,
भले अकल के कच्चे है, बड़े बड़ों से अच्छे है।

++++++++++++++++++++++++++

दीवाली, दिलवाली है, बिल्कुल भोली भाली है,
छोटे बड़े पुरुष नारी सब, चंचल हलचल करते है
दीपों के जगर मगर में, कीट फफूद उतरते है

++++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः हथेली पर कविता
रचनाकारः डॉ० मृदुला झा
कीमतः१५० रुपये
सम्पर्कः बेलन बाजार, मुंगेर-८११२०१, बिहार

प्रस्तुत काव्य संग्रह हथेली पर कविता में कुल ६१ कविताएं संकलित हैं. इसमें मानवीय संवेदनाओं की विविध पहलुओं को अनोख तरीखे वर्णित किया है.

प्रथम कविता कैसे भूलॅू में कवियित्री ने प्रेमिल अंतर्भाव को अभिव्यक्त किया है देखिए-

जीवन के उन मधुर पलों की, यादों को मैं कैसे भूलॅू।
अनजाने में हम टकराये, मैं शरमायी तुम घबराये
उन बीती मीठी यादों को, तुम्हीं बताओं कैसे भूलॅू।।

बिछुड़े हुए 'हमसफर' को याद करते हुए-
गीत की महफिल लगी है, प्यार की घंटी बजी है
हमसफर बिन जिंदगी अब, बोझ-सी लगने लगी है।
कवयित्रि इसी कविता में मर्मस्पशी पंक्तियां देखिए-
गम की काली रात देखो, तमस को उकसा रही है
आ भी जा मेरे सजन अब, प्रिया दस्तक दे रही है
'कविता' शीर्षक के अंतर्गत कवियित्री ने एक कविता क्या है को बखूबी दर्शाया है.

++++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः मैं अर अँगुली उठा दूँ

रचनाकारः विनय शंकर दीक्षित 'आशु'

कीमतः१५० रुपये

सम्पर्कः ५२५, उदयनभवन, चन्द्रशेखर आजाद नगर, आवास विकास कॉलोनी, उन्नाव-२०६८०१, उ.प्र.

सृजनधर्मी श्री 'आंशु जी ने यथार्थ की भावभूमि पर अन्तर्मन की वेदना को व्यंग्य के स्वरों से मुखरित कर समाज और पर्यावरण की विसंगतियों के विरुद्ध तुमुल शंखनाद किया है. लोक-कल्याण हित 'सृजन का सवाल' रखते हुए रचनकार का प्रगतिधर्मी-कर्तव्यबोध-
अंगार को निगलकर/आग उगलना
बड़ी साधारण बात-सी है।
जहर को बुताकर साथियों/ अमृत बहाओं
तो मैं समझूंगा कोई करामात है।
समाज के कर्मकौशल जीवी कर्मठ अंग का कातर चित्रण करती, हृदय और मन को एक साथ प्रकम्पित करती यह रचना अत्यंत प्रभावास्पद है-
कोई भी तो अवलम्बन नहीं है मेरे पास
जो मुझे नीलकंठ कहकर पुकरवाये,
कीर्ति के शिखर पर मुझको चढ़ाये,
चढ़ना भी नहीं है मुझको शिखर पर,
क्योंकि शिखर पर नेत्र अपनी सामर्थ्य खो देता है।

प्रस्तुत काव्य संग्रह हथेली पर कविता में कुल ६१ कविताएं संकलित हैं. इसमें मानवीय संवेदनाओं की विविध पहलुओं को अनोख तरीखे वर्णित किया है.
प्रथम कविता कैसे भूलूँ में कवियित्री ने प्रेमिल अंतर्भाव को अभिव्यक्त किया है देखिए-
जीवन के उन मधुर पलों की, यादों को मैं कैसे भूलूँ।
अनजाने में हम टकराये, मैं शरमायी तुम घबराये
उन बीती मीठी यादों को, तुम्हीं बताओं कैसे भूलूँ।।
सुकवि श्री आंशु जी की बहुआयामी रचनाधर्मी लेखनी विविधा विम्बों, प्रतीकों-प्रतिमानों के माध्यम से सामाजिक छल-छद्मों एवं मिथ्या आडम्बरों पर इसी प्रकार कर्कश प्रहार करती रहे, नित नवीन सृजन संभावनाओं के पथ को प्रशस्त करती रहे, नित नवीन सृजन संभावनाओं के पथ को प्रशस्त करती रहे, इन्हीं शुभभावनाओं का भावार्पण और मंगलकामना कि इन रचनाओं का हिन्दी साहित्य जगत में यत्र-तत्र सर्वत्र स्वागत हो, समाज के प्रखर प्रहरी युवा कवि को सृजनरत रहने की सत्प्रेरणा मिलती रहे.
समीक्षकः सुरेश चन्द्र तिवारी, उपजिलाधिकारी, उमरा, सुल्तानपुर

++++++++++++++++++++++++++++++++++

प्राप्त पुस्तकें

पुस्तक का नामः अंजना

रचनाकारः डॉ० तेज नारायण कुशवाहा

कीमतः १०/ रुपये

प्राप्ति स्थलः ईशीपुर, भागलपुर, बिहार

++++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः दरवाजे खुल गये

लेखकः वेद प्रकाश कंवर

कीमतः१५०/-रुपये

सम्पर्कः१२४ पाकेट एफ-२५, सेक्टर-७, रोहिणी, दिल्ली-११००८५

हिन्दी उदय सम्मान हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान ने वर्ष ०६ से प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/ स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है. इसमें प्रतिभागी को अंक पत्र, नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष / मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित प्रति के साथ **३० दिसम्बर २००६ तक** भेजना होगा. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/ विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में **हिन्दी उदय सम्मान** व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी. अपना आवेदन निम्न पते पर भेजें:

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

email: sahityaseva@rediffmail.com **Mo.**: (O) 09335155949

प्रविष्टियाँ आमंत्रित है

साहित्य जगत में अत्यधिक लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित व अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी चर्चा की ओर अग्रसित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिककारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्न सम्मान प्रस्तावित है-साहित्य श्री, डॉ.रामकुमार वर्मा सम्मान, बाल श्री सम्मान, कैलाश गौतम सम्मान, डॉ.किशोरी लाल सम्मान, प्रवासी भारतीय सम्मान, अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सेवी सम्मान, राजभाषा सम्मान,सम्पादक श्री, विधि श्री, डॉक्टरश्री, सैनिक श्री, विज्ञान श्री, प्रशासक श्री, कलाकार श्री, सांस्कृतिक विरासत सम्मान, बाल साहित्यकार सम्मान, पुलिस हिंदी सेवा पदक, युवा पत्रकारिता सम्मान, राष्ट्रभाषा सम्मान, युवा कहॉनीकार सम्मान, युवा व्यंग्यकार सम्मान, युवा कवि सम्मान, विहिसा अलंकरण, दोहाश्री, ग़ज़ल श्री, राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान, राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान आदि प्रदान किएं जाएंगे. इस वर्ष से निम्न मानद उपाधियां प्रस्तावित है-हिन्दी रत्न, हिन्दी भाषा रत्न, हिन्दी गौरव, हिन्दी भाषा गौरव, हिन्दी श्री, हिन्दी भाषा श्री.

पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें, रचनाएं लौटायी नहीं जाएगी. ये पुरस्कार इलाहाबाद में गरिमापूर्ण साहित्यिक समारोह में प्रदान किये जायेंगे.

विशेषः १.विस्तृत जानकारी के लिए टिकट लगा जबाबी लिफाफा भेजें अथवा ईमेल करें. २.मानद उपाधियों का निर्धारण मांगी गयी जानकारी के आधार पर किया जाएगा. ३. यह जरुरी नहीं है प्रत्येक वर्ष सभी उपाधियां दी ही जाए. उपाधियां तभी दी जाएगी जब प्राप्त प्रविष्टियां मानक के अनुकूल होगी. इसकी कोई बाध्यता नहीं होगी.

आवेदन प्रपत्र मंगाने की अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २००६

प्रसार सचिव

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011

ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

भारत सरकार एवं यू.जी.सी द्वारा मान्यता प्राप्त

जिसस क्राइस्ट रिजनल पालिटेक्निक

जेल रोड पॉवर हाउस के पास, अंधा खाना, नैनी, इलाहाबाद-२११००८

प्रवेश प्रारम्भ

- तीन वर्षीय डिप्लोमा प्रोग्राम ■ डिप्लोमा इन सिविल इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन मेकेनिकल इंजीनियरिंग ■डिप्लोमा इन कम्प्यूटर सांइस
- डिप्लोमा इन इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन इलेक्ट्रानिक्स एण्ड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग

विशेष

- आई.टी.आई.एवं इंटर मैथ के छात्र/छात्राओं को सीधे तीसरे सेमेस्टर में प्रवेश
- आकर्षक एवं सुसज्जित कम्प्यूटर लैब, पुस्तकालय, भौतिकी/रसायन प्रयोगशाला, मैकेनिकल एवं इलेक्ट्रिकल प्रयोगशाला
- योग्य, अनुभवी तथा प्रशिक्षित फेकेल्टी

सम्पर्क समयः प्रातः ८ बजे से अपरान्ह २ बजे तक

सम्पर्क करें: 0532–2696075, 9415128575

निःशुल्क प्रशिक्षण

(विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा संचालित)

- कम्प्यूटर
- सिलाई
- रेशमी कढ़ाई
- मशीन की कढ़ाई
- सिंधी कढ़ाई
- जरदोजी की कढ़ाई
- आइस्क्रीम
- पॉट डेकोरेशन
- बेंकिग (केक, बिस्किट बनाना)
- कुकिंग
- पेंटिग
- ब्लॉक प्रिंटिग
- स्क्रीन प्रिंटिंग
- पैचवर्क
- मुकैश या फरदी
- रंगोली
- टाई एण्ड डाई
- बाटिक
- स्पंज–स्प्रे प्रयोग
- मेंहदी
- फ्लॉवर मेंकिग
- ब्यूटीशियन
- ढोलक
- बरगद का पेड़
- बोनजाई
- ज्वेलरी मेंकिग
- साफ्ट ट्वायज
- हिन्दी लेखन (कविता / लेख / कहॉनी / संस्मरण / उपन्यास)
- पत्रकारिता

अंतिम तिथिः 30 मई 2009

प्रशिक्षण हेतु निम्न केन्द्रों पर सम्पर्क करें:

स्नेहांगन कला केन्द्र

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, **मो0**:9335155949 **समयः**अपरान्ह 2 से 7

पदमा प्रशिक्षण केन्द्र

65, भारती भवन रोड, लोकनाथ, इलाहाबाद, **मो0**: 9450627910, 9616550508 सुबह 10 से 2 बजे तक

यूनिक्स कम्प्यूटर्स

निकट सिंह बुक डिपो, एडीए मोड़, विनाबा नगर, नैनी, इलाहाबाद 9335354462 प्रातः 7 से सायं 7 बजे

जीसस क्राइस्ट रिजनल पालिटेक्निक

अंधा खाना, जेल रोड पावर हाउस के पास, नैनी, इलाहाबाद, 2696075, 9415128575 **समयः**प्रातः 8 से 2

ईमेल करें: sahityaseva@rediffmail.com

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93,नीम सराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया. **डाक पंजीयन संख्याः** एडी.306 / 2006–08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380 **संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी